अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका का 51 वां अंक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पश्चिम रेलवे,

मुंबई-400020

उज्जैन स्टेशन के निरीक्षण के दौरान सुश्री इला सिंह, तत्कालीन उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रेलवे), महानिदेशक रेलवे, महानिदेशक लेखापरीक्षा पश्चिम रेलवे,मुख्य अभियंता निर्माण, मंडल रेल प्रबंधक रतलाम एवं रतलाम मंडल के विभागाध्यक्षों के साथ।

सुश्री इला सिंह,तत्कालीन उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रेलवे); श्री समरकांत ठाकुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा (रेलवे); श्री धीरेन माथुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा (पश्चिम रेलवे) और श्री रजनीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक,रतलाम द्वारा उज्जैन स्टेशन परिसर में वृक्षारोपण ।

आनो नो भद्रा कृतवों यानतु विश्वत:

हमें सभी ओर से कल्याणकारी विचार प्राप्त हों (ऋग्वेद: 1.89.1)

सितम्बर 2023

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री धीरेन माथुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री सतिश एन वासनिक, उप निदेशक, पश्चिम रेलवे, मुम्बई

संपादक

श्रीमती बी.शुभा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

परामर्श दाता मंडल

श्री नितिन मोरे , वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री आभाष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री नीरज कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री आचारिया कुणाल किशोर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती प्राजक्ता परब, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकाशन व्यवस्था

श्री भारत भूषण, वरिष्ठ अनुवादक
एवं
श्री अशोक बिश्नोई, कनिष्ठ अनुवादक

संपर्क सूत्र: दूरभाष 022-22301189, फ़ैक्स 022-22054338, रेलवे 090-22361

रचनाओं की मोलिकता का दायित्व रचनाकारों का है एवं इसमें दिए गए विचार उनके अपने हैं।

विषय-वस्तु

1.	मुख्य संरक्षक का संदेश	4
2.	संरक्षक का संदेश	5
3.	संपादकीय	6
4.	राजभाषा नीति चर्चा	7
5.	मैं कौन	10
6.	कैलास मंदिर	12
7.	तत्वबोध	13
8.	जागरूक नागरिक की अभिलाषा	14
9.	फिर से जिंदगी	15
10.	मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ	16
11.	समय का महत्व	17
12.	हमारा प्यारा झंडा	18
13.	सकारात्मकता -एक जादुई छड़ी	19
14.	समयप्रबंधन	21
15.	अंडमान-निकोबार सैर सपाटा	22
16.	गुमनाम शहीद को नमन	25
17.	गणपति उत्सव	27
18.	विक्रम	28
19.	भाषा की व्यथा	30
20.	यूपीआई	31
21.	जीवनद्वंद	33
22.	परीक्षाओं में पारदर्शिता	35
23.	चंद्रयान-3	36
24.	आत्मलीन	38
25.	हकीकत	39
26.	बचपन का प्यार	40
27.	पावनभूमि गया जी	41
28.	तोते में प्राण	43
29.	हिंदी दिवस-2022	45

संदेश

यह बहुत खुशी की बात है कि हर वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है। इस वार्षिक पत्रिका के 51वें अंक को आपके हाथों में सौंपकर मुझे बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है। हिन्दी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने व कार्यालय में कार्य करने का एक बेहद आसान तरीका है। इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा पाठकों से यह अपेक्षा है कि वे सरकारी कामकाज हिन्दी भाषा में करने में गौरव अनुभव करें और राजभाषा के प्रयोग के निर्धारित लक्ष्यों की निरंतर प्राप्ति में भविष्य में भी प्रयासरत रहें। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को बहुत बहुत बधाई जिन्होंने अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना योगदान दिया।

आशा है कि 'अभिव्यक्ति' पत्रिका का यह 51वां अंक आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा और हिन्दी के विकास में सहायक होगा।

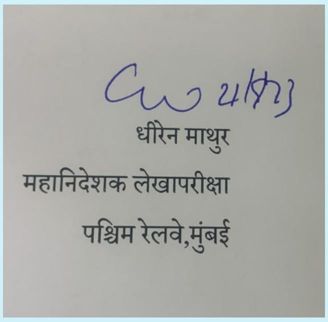

संदेश

किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी भाषा सर्वोपरि होती है और फिर भारत जैसे बहुभाषा-भाषी राष्ट्र में तो भाषा मयूर पंख समान अपनी छटा का अलग ही रंग बिखेरती है। अनेकता में एकता ऐसे ही थोड़ा कहा जाता अपितु ये सभी को साथ लेकर चलने की बात है। सर्वांगीण विकास के लिए भाषा का अपना ही महत्व है। इतिहास साक्षी रहा है कि जिस भी राष्ट्र ने अपनी भाषा पर पकड़ बनाए रखी है, उसे कोई पराजित नही कर सका है और जो अपनी भाषा रूपी विरासत को सहेज कर न रख सका वो समय के कालचक्र में अपना अस्तित्व खो बैठा। इसलिए महान विचारकों ने कहा भी है यदि किसी राष्ट्र को हमेशा के लिए पराधीन करना है तो सबसे पहले उसकी भाषा रूपी विरासत को नष्ट कर दो। इसमें कोई अतिश्योक्ति नही होगी यदि भविष्य में केवल भाषा के आधार पर ही कोई राष्ट्र समूचे विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें। अत: हमें समय रहते सचेत होकर आने वाली आंधी को रोकना होगा ताकि हमारे बहुभाषी राष्ट्र का कोई अहित न कर सकें। हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका भी हमारी राजभाषा की उत्तरोतर प्रगति की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है और इस वर्ष हिंदी गृह पत्रिका का 51वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को मेरी अशेष शुभकामनाएं।

.

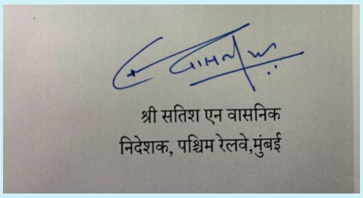

संपादकीय

आदि धर्मग्रंथ मान्यताओं के अनुसार विद्या की देवी माँ सरस्वती ने अपनी वीणा से स्वरों की उत्पत्ति कर इस सृष्टि को भाषा रूपी अंलकार से अलंकृत किया था। उसके बाद मनुष्यों ने अपनी व्यावसायिक एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इसे अपने कर्मकाल के अनुसार एक विशेष राष्ट्र की भाषा की अभिव्यंजना दी। आज संपूर्ण विश्व में अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती है परन्तु निमित लक्ष्य केवल विचारों की संप्रेषणता ही तो है। अब जिस भी भाषा का प्रयोग करें, बात होनी चाहिए। यदि वक्ता और श्रोता का तालमेल हो रहा है तो भाषा प्रयोग सफल माना जाता है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में इस प्रयोग को सफल बनाती है जनमानस की भाषा - हमारी हिंदी भाषा। किसी कवि ने इसे यथार्थ रूप प्रदान करने के लिए कहा भी है – हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्तां हमारा। इसी भावना से ओत-प्रोत हमारी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका का 51वां अंक प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

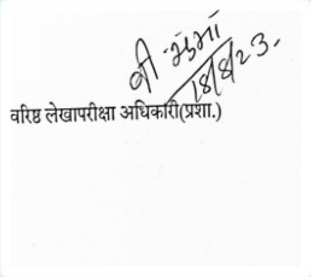

राजभाषा नीति चर्चा

संविधान सभा ने एक लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 सितम्बर की शाम को संविधान सभा में हुई बहस के समापन के बाद जब संविधान का भाषा सम्बन्धी तत्कालीन भाग 14 क और वर्तमान भाग 17, संविधान का भाग बन गया तब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने भाषण में बधाई के कुछ शब्द कहे। उन्होंने कहा, "आज पहली ही बार ऐसा संविधान बना है जब कि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अपूर्व अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत प्रभाव पड़ेगा"। उन्होंने इस बात पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की कि संविधान सभा ने अत्यधिक बहुमत से भाषा-विषयक प्रावधानों को स्वीकार किया। अपने वक्तव्य के उपसंहार में उन्होंने जो कहा वह अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा,

“ यह मानसिक दशा का भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हम केन्द्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे उससे हम एक-दूसरे के निकटतर आते जाएँगे। आख़िर अंग्रेज़ी से हम निकटतर आए हैं, क्योंकि वह एक भाषा थी। अब उस अंग्रेज़ी के स्थान पर हमने एक भारतीय भाषा को अपनाया है। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठतर होंगे, विशेषतः इसलिए कि हमारी परम्पराएँ एक ही हैं, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में सब बातें एक ही हैं। अतएव यदि हम इस सूत्र को स्वीकार नहीं करते तो परिणाम यह होता कि या तो इस देश में बहुत-सी भाषाओं का प्रयोग होता या वे प्रांत पृथक हो जाते जो बाध्य होकर किसी भाषा विशेष को स्वीकार करना नहीं चाहते थे। हमने यथासम्भव बुद्धिमानी का कार्य किया है और मुझे हर्ष है, मुझे प्रसन्नता है और मुझे आशा है कि भावी संतति इसके लिए हमारी सराहना करेगी। ”

संविधान की धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी है। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) है। किन्तु इसके साथ संविधान में यह भी व्यवस्था की गई कि संघ के कार्यकारी, न्यायिक और वैधानिक प्रयोजनों के लिए 1965 तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहे। तथापि यह प्रावधान किया गया था कि उक्त अवधि के दौरान भी राष्ट्रपति कतिपय विशिष्ट प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग का प्राधिकार दे सकते हैं।

ससद का कार्य हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति या लोकसभा के अध्यक्ष विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को सम्बोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। (संविधान का अनुच्छेद 120) , किन प्रयोजनों के लिए केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है, और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अन्तर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मन्त्रालय की ओर से जारी किए गए निर्देशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा

(1) संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) (1) खण्ड (2) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारम्भ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था, परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा संकल्प, 1968

भारतीय संसद के दोनों सदनों (राज्यसभा और लोकसभा) ने १९६८ में 'राजभाषा संकल्प' के नाम से निम्नलिखित संकल्प लिया।

1. जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एंव विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

2. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 22 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है , और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाए किए जाने चाहिए :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

3. जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णत कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी किया जाना चाहिए :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए, और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

4. और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए

यह सभा संकल्प करती है कि-

(क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्त्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत होगा; और

(ख) कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।

मैं कौन—जैनेंद्र कुमार

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में **जैनेंद्र कुमार** (२ जनवरी, १९०५- २४ दिसंबर, १९८८) का विशिष्ट स्थान है। वह हिंदी उपन्यास के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य हैं। जैनेंद्र अपने पात्रों की सामान्यगति में सूक्ष्म संकेतों की निहिति की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ इसी कारण से संयुक्त होकर उभरती हैं। जैनेंद्र के उपन्यासों में घटनाओं की संघटनात्मकता पर बहुत कम बल दिया गया मिलता है। चरित्रों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं के निर्देशक सूत्र ही मनोविज्ञान और दर्शन का आश्रय लेकर विकास को प्राप्त होते हैं।

जैनेंद्र कुमार का जन्म २ जनवरी सन १९०५, में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गांव में हुआ।[9] उनके बचपन का नाम आनंदीलाल[10] था। इनकी मुख्य देन उपन्यास तथा कहानी है। एक साहित्य विचारक के रूप में भी इनका स्थान मान्य है। इनके जन्म के दो वर्ष पश्चात इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी माता एवं मामा ने ही इनका पालन-पोषण किया। इनके मामा ने हस्तिनापुर में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। वहीं जैनेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हुई। उनका नामकरण भी इसी संस्था में हुआ। उनका घर का नाम आनंदी लाल था। सन १९१२ में उन्होंने गुरुकुल छोड़ दिया। प्राइवेट रूप से मैट्रिक परीक्षा में बैठने की तैयारी के लिए वह बिजनौर आ गए। १९१९ में उन्होंने यह परीक्षा बिजनौर से न देकर पंजाब से उत्तीर्ण की। जैनेंद्र की उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। १९२१ में उन्होंने विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ दी और कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के उद्देश्य से दिल्ली आ गए। कुछ समय के लिए आप लाला लाजपत राय के 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' में भी रहे, परंतु अंत में उसे भी छोड़ दिया।

सन १९२१ से २३ के बीच जैनेंद्र ने अपनी माता की सहायता से व्यापार किया, जिसमें इन्हें सफलता भी मिली। परंतु सन २३ में वे नागपुर चले गए और वहाँ राजनीतिक पत्रों में संवाददाता के रूप में कार्य करने लगे। उसी वर्ष इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और तीन माह के बाद छूट गए। दिल्ली लौटने पर इन्होंने व्यापार से अपने को अलग कर लिया। जीविका की खोज में ये कलकत्ते भी गए, परंतु वहाँ से भी इन्हें निराश होकर लौटना पड़ा। इसके बाद इन्होंने लेखन कार्य आरंभ किया। २४ दिसम्बर १९८८ को उनका निधन हो गया।

उपन्यासः 'परख' (१९२९), 'सुनीता' (१९३५), 'त्यागपत्र' (१९३७), 'कल्याणी' (१९३९), 'विवर्त' (१९५३), 'सुखदा' (१९५३), 'व्यतीत' (१९५३) तथा 'जयवर्धन' (१९५६) और 'मुक्ति-बोध'(कथा के पात्र-मैं, पत्नी-राजी, बेटी-अंजु(अन्जो) इत्यादि)।

निबंध संग्रहः 'प्रस्तुत प्रश्न' (१९३६), 'जड़ की बात' (१९४५), 'पूर्वोदय' (१९५१), 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' (१९५३), 'मंथन' (१९५३), 'सोच विचार' (१९५३), 'काम, प्रेम और परिवार' (१९५३), 'ये और वे' (१९५४), इतस्ततः (१९६३), समय और हम (१९६४), परिप्रेक्ष्य (१९७७), साहित्य और संस्कृति—इनके *साहित्य और संस्कृति संबंधी निबंधों का संग्रह है जिसे ललित शुक्ल ने संपादित करके प्रकाशित किया था।* (१९७९)।

अनूदित ग्रंथः 'मंदालिनी' (नाटक-१९३५), 'प्रेम में भगवान' (कहानी संग्रह-१९३७), तथा 'पाप और प्रकाश' (नाटक-१९५३)।

सह लेखनः 'तपोभूमि' (उपन्यास, ऋषभचरण जैन के साथ-१९३२)।

हिंदी एक भाषा मात्र नहीं है, यह एक अहसास है।

कैलाश मंदिर – एक उत्कृष्ट वास्तुकला का अविश्वनीय उदाहरण

श्रीमती शिल्पी अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या आप जानते हैं कि एक स्मारक, इतना महान है कि इसे इंसानों द्वारा बनाया जाना असंभव सा प्रतीत होता है, मुंबई से मात्र 350 किमी से कम की दूरी पर स्थित है। इसका नाम है कैलाश मंदिर ! इससे पहले कि मैं आपको इस महान मंदिर के बारे में कुछ रोचक तथ्य पेश करूँ, आइए थोड़ा एलोरा की गुफाओं के बारे में जान लेते हैं। एलोरा एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है जो महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यह दुनिया के सबसे बड़े रॉक-कट हिंदू मंदिर गुफा परिसरों में से एक है, जिसमें 600-1000 ई. की अवधि की कलाकृतियां हैं। एलोरा की गुफाओं तक पहुँचने का सबसे अच्छा तरीका या तो मुंबई से 7 घंटे की लंबी ड्राइव है या ट्रेन से औरंगाबाद पहुँचना सही रहेगा। औरंगाबाद शहर मुंबई से रोड और रेलवे के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। एलोरा की गुफाएं औरंगाबाद से मुश्किल से 30 किमी की दूरी पर हैं, और टैक्सी, बसें और ऑटो आसानी से उपलब्ध हैं। एलोरा में 100 से अधिक गुफाएं हैं। ये सभी चरणनंदरी पहाड़ियों में बेसाल्ट चट्टानों को खोदकर बनायीं गई हैं, जिनमें से 34 जनता के दर्शन के लिए खुली हैं। इनमें 17 हिंदू, 12 बौद्ध और 5 जैन गुफाएं हैं। एलोरा गुफाओं का मुख्य आकर्षण, कैलाश मंदिर, गुफा संख्या 16 में स्थित है। यह दुनिया में सबसे बड़ा एकल अखंड पत्थर उत्खनन है। यह एक रथ के आकार का स्मारक है जो भगवान शिव को समर्पित है। कैलाश मंदिर की खुदाई में विभिन्न हिंदू देवताओं को चित्रित करने वाली मूर्तियां और साथ ही दो प्रमुख हिंदू महाकाव्यों को सारांशित करने वाले पैनल भी शामिल हैं। कैलाश मंदिर अपने ऊर्ध्वाधर उत्खनन के लिए उल्लेखनीय है। इसे बनाने के लिए मूल चट्टान के शीर्ष से नक्काशी शुरू की गयी और नीचे की ओर खुदाई की गई ।

इसे भीतर से कोरा तो गया ही है, बाहर से मूर्ति की तरह समूचे पर्वत को तराश कर इसे द्रविड़ शैली के मंदिर का रूप दिया गया है। इसके निर्माण के क्रम में अनुमानत: ४० हज़ार टन भार के पत्थरों को चट्टान से हटाया गया है। इस तरह के मंदिर का रूप सामने से खुदाई करके हासिल नहीं किया जा सकता था। यही कारण है कि लोग अभी भी इसे बनाने वालों के कौशल स्तर पर आश्चर्य करते हैं जो कम तकनीक के साथ भी इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने में सक्षम थे। इस लेख को समाप्त करने से पहले मैं एक बात और कहना चहुंगी। अगर आपकी जेब में ₹ 20 का नोट है, तो आप कृपया उसे निकालें और उसके पीछे की तस्वीर को देखें। आप समझ गए होंगे कि मैं क्या कहना चाहती हूँ।

तत्वबोध

श्री आचारिया कुणाल किशोर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सफलता के सर्वोच्च शिखर पे पहुंचकर गर दंभ न हो ,
विघ्नों में जब घिरकर भी जब तुम सहज रहो ।
सतही विरोधाभास में जब देख सको तुम समबद्धता,
तत्वबोध की पहली सोपान पार लिए तब तुम ये समझना ।।

हर्ष -विषाद में जब तुम एकरूपता बरकरार रखों,
अपने-परायें से ऊपर उठकर जब सबमें हरि को देख सकों ।
अपना हित-अहित को त्यागकर तुम जब स्वधर्म चुनों,
तत्वबोध की घुट्टी पा लिए तब तुम ये समझना ।।

तत्वबोध ही है जिसने नानक, कबीर, रैदास को श्रेष्ठ बनाया,
तत्वबोध ही है जिसने मनुष्यों को देवत्व दिलाया ।
तत्वबोध ही है अखंड ब्रहमांड का सार,
तत्वबोध पाकर ही कर सकता मानव भव सागर को पार ।।

जागरूक नागरिक की अभिलाषा

श्रीमती नंदिनी कासारे
व.लेखापरीक्षक,वड़ोदरा

नागरिक हम देश के,
हाथ मे सब तैयार चाहिए।
बिजली कभी नहीं बचाएंगे,
लेकिन बिल कम आना चाहिए।

पेड़ एक भी नहीं लगाएंगे,
लेकिन बारिश अच्छी होनी चाहिए।
शिकायत कभी नहीं करेंगे,
लेकिन कार्यवाही तुरंत होनी चाहिए।

रिश्वत बिना काम नहीं करेंगे
लेकिन भ्रष्टाचार खत्म होना चाहिए।
कचरा खिड़की से बाहर डालना है
लेकिन स्वच्छता हर जगह चाहिए।

काम मे टाइमपास करना है
लेकिन वेतन आयोग हर साल चाहिए।
जाति के नाम पर सारी सुविधाएँ चाहिए
लेकिन देश धर्मनिरपेक्ष चाहिए।

मतदान करते वक्त जात पात देखना है
लेकिन जातिवाद देश मे नहीं चाहिए।
आयकर भरते वक्त पलायन के रास्ते खोजने है
लेकिन देश का विकास जोरदार चाहिए।
प्रांतवाद भाषावाद करते रहेंगे
लेकिन देश मे मात्र एकता चाहिए।

.

॥ हिंदी का सम्मान , राष्ट्र का सम्मान है ॥

फिर से ज़िंदगी

श्री नीरज कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन के हर हालात को तुम, अच्छा बुरा बोल जाते हो,
यह अच्छा है, वह बुरा है, ये तुम कैसे बतलाते हो ?
मन का हुआ तो अच्छा, वरना बुरा,
हे इंसान! तुम क्यूँ सब कुछ अपनी उम्मीदों से ही तोल जाते हो !

नाम, काम, जाति और मजहब, सब को रख किनारे पे
भूल जा कुछ पल के लिए, सब कुछ अपने बारे में
मिटा दे सब फिजूल उम्मीदें, तब तेरे समझ भी आएगा
दुःख तो तूने ही रचा था, उम्मीदों के साये में।

उम्मीदें टूटी हैं तब, रोकर क्या हो पाएगा ?
दुःख तो तेरी रचना थी, कोई और कैसे दोषी कहलाएगा ?
व्यर्थ कर रहा समय अभी भी तू, फिजूल विचारों मे
मुट्ठी भर रेत की तरह बाकी समय भी बह जाएगा।

क्यों मांगता है भीख हर रोज़, ईश्वर के दरवाज़े पे,
जब सब कुछ रब ने लिखा है, फिर क्यों शक है उसके इरादे पे ?
आ जा वापस वर्तमान में, भविष्य अभी बनाना है
अस्तित्व मे कदम उतार, निकल बाहर विचारों से।

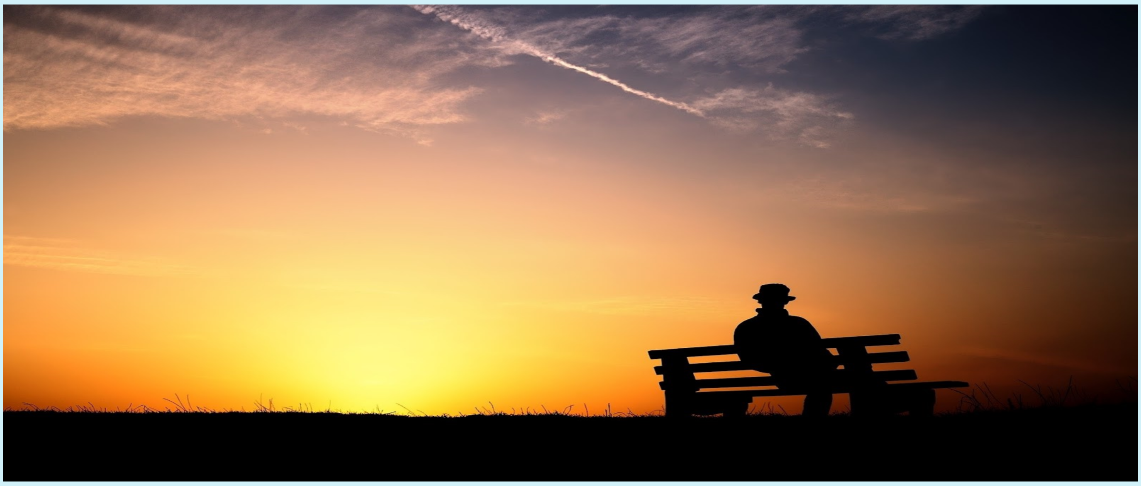

मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ।

श्री दिनेश खापरे
व.लेखापरीक्षक,वड़ोदरा

मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ
देशहित मे सदा खड़ा हूँ
गर्व है मुझे मेरे निष्पक्षता पर,
जिसके लिये सदा प्रतिबध् हूँ
मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ

बडा हो या छोटा हो,
मैं सबको देखता, एक नजरियों से हूँ
अखंडता देश कि बनी रहे, यही स्वंप्न मैं देखा करता हूँ
मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ

तत्पर रहते सैन्य मेरे,
संकल्प मेरा पुरा करने को
गर्मी, बरिश, सर्दी मे सदा डटे रहते हैं,
देश कि विरासत सम्भालने को.
मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ

वक़्त के साथ मैं रुप बदलकर और सशक्त बन रहा हूँ
संगणक युग कि चुनैतियों को स्वीकार कर,
विकास पथ पर चले जा रहा हूँ
मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ

इतिहास गवाह है, चलता नही किसी के बल से,
सविंधान ने दिया है वरदान मुझे,
अपने कर्तव्य पद पर चलता हूँ
निडरता से लड़ता हूँ,

मैं लेखापरीक्षा विभाग हूँ।

समय का महत्व

श्री निमेष गुप्ता
व.लेखापरीक्षक, वड़ोदरा

समय क्या है? समय एक ऐसी चीज है जो हीरे-सोने से भी महंगी है, समय की कीमत पैसे से ज्यादा है, समय किसी भी दुश्मन से ज्यादा ताकतवर है, समय से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता। समय का बहुत महत्व है और इसका गहरा अर्थ है। इसलिए सफल जीवन के लिए समय के महत्व को समझना जरूरी है । कहा जाता है कि समय उन्हें महत्व देता है जो समय को महत्व देते हैं। अच्छे काम के लिए समय का सदुपयोग करना आपको अच्छे परिणाम देगा और अगर आप इसे बुरे काम में इस्तेमाल करेंगे तो यह आपको निश्चित रूप से बुरा परिणाम देगा। समय और धन की दौड़ में हमेशा समय की जीत होती है। पैसा कमाना आपको अमीर बना देगा लेकिन समय को जीतना आपको सफल बनाएगा। समय फिर कभी लौट कर नहीं आता, आपको इसका उपयोग करने का केवल एक ही मौका मिलता है। यदि आप आज समय का सदुपयोग करते हैं, तो यह आपको कल लाभकारी परिणाम देगा। समय बहुत कीमती है और इसे अच्छे कामों में खर्च करने की जरूरत है।समय एक महत्वपूर्ण कारक है जो हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमें अपनी दैनिक गतिविधियों को करने के लिए समय चाहिए। हमें बीमारी से उबरने के लिए समय चाहिए, हमें स्थिति से आगे बढ़ने के लिए समय चाहिए, जीवन में प्रगति के लिए समय चाहिए, हमें अपने माता-पिता को गौरवान्वित करने के लिए समय चाहिए, हमें अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए समय चाहिए, इस प्रकार हमारे जीवन का हरेक आयाम समय से प्रभावित हैं। सभी को एक दिन में 24 घंटे समान मिलते हैं लेकिन उपयोग करने का तरीका हर व्यक्ति में अलग-अलग होता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि समय की शक्ति के आगे कोई नहीं टिक सकता। समय अमीर को गरीब या गरीब को अमीर में बदलने में सक्षम है। यह एक खुश व्यक्ति को रोने के लिए या रोने वाले व्यक्ति को कुछ ही सेकंड में खुश बना सकता है। समय इतना शक्तिशाली होता है कि हम उसे देख नहीं सकते लेकिन समय के सामने उपस्थित परिस्थितियाँ हमें बहुत कुछ देखने पर मजबूर कर देती हैं।

अंत में, हम कह सकते हैं कि समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। इसके अलावा, एक कहावत है कि "यदि आप समय बर्बाद करते हैं, तो समय आपको बर्बाद करेगा।" केवल यह वाक्य यह बताने के लिए पर्याप्त है कि समय कितना महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

हमारा प्यारा झंडा - तिरंगा

श्री राहुल मौर्य
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तिरंगा इसको कहते हैं, ये हमारी पहचान है।
यह केवल झंडा नहीं, ये हमारी शान है।

केसरिया रंग जो शौर्य हमारा गाता है।
लोगों के दिलों में प्रेम जगाता है।
वीरों का बलिदान ही उनका अभिमान है।
यह केवल झंडा नहीं, ये हमारी शान है।

सफ़ेद रंग जो मध्य में है, वहाँ सत्य अहिंसा बहती है।
विश्व शांति हो लोगों में, यह हमेशा कहती है।
अशोक चक्र न्याय और प्रगति का सम्मान है।
यह केवल झंडा नहीं, ये हमारी शान है।

हरा रंग अंतिम पंक्ति पर, खेतो खलियानों में लहराता है।
किसान अपने पसीने से, फसलों को उगाता है।
यह टैगोर के जन गन मन का गुणगान है।
यह केवल झंडा नहीं, ये हमारी शान है।

जय हिन्द , जय भारत

सकारात्मकता : एक जादुई छड़ी

श्री विकास ब्रहमक्षत्रिय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या कभी किसी ने सोचा था 'एक चाय बेचने वाला लड़का भारत का प्रधान मंत्री बनेगा।' या यदि आप को कोई यह कहता की एक अखबार बेचनेवाला लड़का एक महान वैज्ञानिक बन अंतरिक्ष में रोकेटों की उडान भरेगा..... महामहिम राष्ट्रपति बनेगा तो आप यही कहोगे ना यह तो नामुमकीन है। यही 'नामुमकीन' को मुमकिन किया उनकी सकारात्मका भरी सोच ने।

यह एक आप की सोच ही है जो आप को आसमाँ की ऊँचाई पे ले जा सकती है या फिर आपको अंधकार की खाई में ढकेल सकती है।

आप जरा नजर उठाकर देखेगे तो आप को कई ऐसे उदाहरण मिलेंगे जो लोग बहुत ही सामान्य या फिर दीन-हीन अवस्था से बहुत उपर उठ गये।धीरूभाई अंबानी एक साधारण से पेट्रोलपम्प पर नौकरी किया करते थे। आज देखों अंबानी परिवार की अमीरी और कारोबार को, क्या कहने।

कैसे हो पाया यह सब ?... यह तो सिर्फ कोई जादूई प्रयास से ही संभव है और यह जादूई शक्ति है' सकारात्मक सोच की शक्ति।

कोई कहेगा, उनके नसीब मे था सबकुछ। तो यह अपनी किस्मत लिखती है अपनी सोच। डॉ.ए.पी.जी. अब्दुल कलाम अपनी अग्निपंख नामक आत्मकथा में लिखते है, 'सपने देखों... यह सपने तरंगे बन अंतरिक्ष में जाती है और उसके हजारों गुना बढ़कर वही विचारों की शक्ति आपके पास वापस आती है।'

प्रकृति का नियम है, आप एक अनाज का दाना बोओगे तो वह आप को कई गुना बन वापस मिलेगा। इसी तरह जैसा सोचोंगे, वैसा ही पाओगे।

क्या यह सकारात्मक सोच का असर आप के काम तक ही सीमित है, नही! इसके परिणाम आप की सेहत पर आप के सामाजिक जीवन पर भी दिखाई देते हैं।

जिस व्यक्ति के मन में सदा ही क्रोध, अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, भय, संदेह आदि नकारात्मक विचार चलते हो, उस के शरीर में ऐसे होर्मौन (स्त्राव) उत्पन्न होते है जिससे यह व्यक्ति दुखी और असहाय महसूस करता है। उसे हाय बी.पी., शुगर, मोटापा, कैंसर जैसी व्याधियां घेर लेती हैं।

आप ही सोचो, जो बात बात पर क्रोधित होता है, बात बात पर अपना रोना रोता है, हर बात में बुराई निकालता रहता है, ऐसे व्यक्ति के साथ भला कौन रहना चाहेगा ? उसका सामाजिक जीवन भी सिकुड़ जाता है।

जो सदा खुश, खिलखिलाता रहता है, उसका साथ किसे अच्छा नही लगता। वह जीने की एक मिसाल बन जाता है।

'थ्री इडियट' नामक सिनेमा में भी इस बात का जिक्र है कि – 'मुर्गी ना जाने अंडे का क्या होगा, लाईफ मिलेगी या तवे पे फ्राय होगा...' ऐसी परिस्थिति जब हो, तब 'होंठ घुमाओ, सिटी बजाओ, सिटी

बजा के बोलो... ओ भैया, आल इज वेल...'. तभी आमिर के दोस्त उनसे पूछते है, 'क्या ऐसे कहने से सब ठीक हो जाता है ?' तो वह बड़ा मार्मिक उत्तर देते है, 'नही! पर इससे झेलने की हिम्मत आ जाती है।'
ऐसे ही है... सकारात्मकता से एक ऐसी लहर उठती है जिससे हम बड़े से बड़े सागर पार कर जाते हैं। इसकी दूसरी ओर, अगर कोई नकारात्मक सोचने लगे तो वह ऐसे भवर में फसता जाता है कि पूरा ही डूब ही जाता है।
और भला क्या जाता है , सकारात्मक सोचने में... आप कहोगे की सिर्फ सोचने से सबकुछ थोड़ी होगा... उसके लिए मेहनत भी तो करनी पड़ेगी ना... तो ठीक है ना, मेहनत भी करो।

जब कोई सकारात्मक सोच के साथ मेहनत करता है तो वह मेहनत भी गजब रंग लाती है। भारत के वैज्ञानिकों ने चाँद पर अपना रोवर 'प्रग्यान' उतारा है... उन्होने सिर्फ मेहनत की क्या...? जी नही! इसके पीछे उनकी सकारात्मकता का फाउंडेशन भी था क्योंकि इससे पहले मिशन 'चांदयान-2' फेल हो चुका था.... अगर वह सोचते के अब नही होगा तो... पर उन्होंने ऐसे नही किया... एक सकारात्मक विचार रखा कि हम यह कर सकते है... और कड़ी मेहनत की....नतीजा (चन्द्रयान-3) हमारे सामने है।

तो आप भी कभी किसी बात में, अपने जीवन के लक्ष्य में यह मत सोचना कि यह कैसे हो पाएगा ??? एक ही सोच - 'मुश्किल नही है कुछ भी अगर ठान लीजीए..।'अँग्रेजी शब्द Impossible भी अगर सकारात्मकता से पढ़े तो वह भी कह रहा है - 'I (a)m Possible'.

सकारात्मकता से सब कुछ संभव है।

नजर बदलो,
नजारे बदल जाएंगे।
सोच बदलो,
सितारे बदल जाएंगे,
कश्तिया बदलने की जरूरत नही,
दिशाओं को बदलो,
किनारे बदल जाएंगे ।।

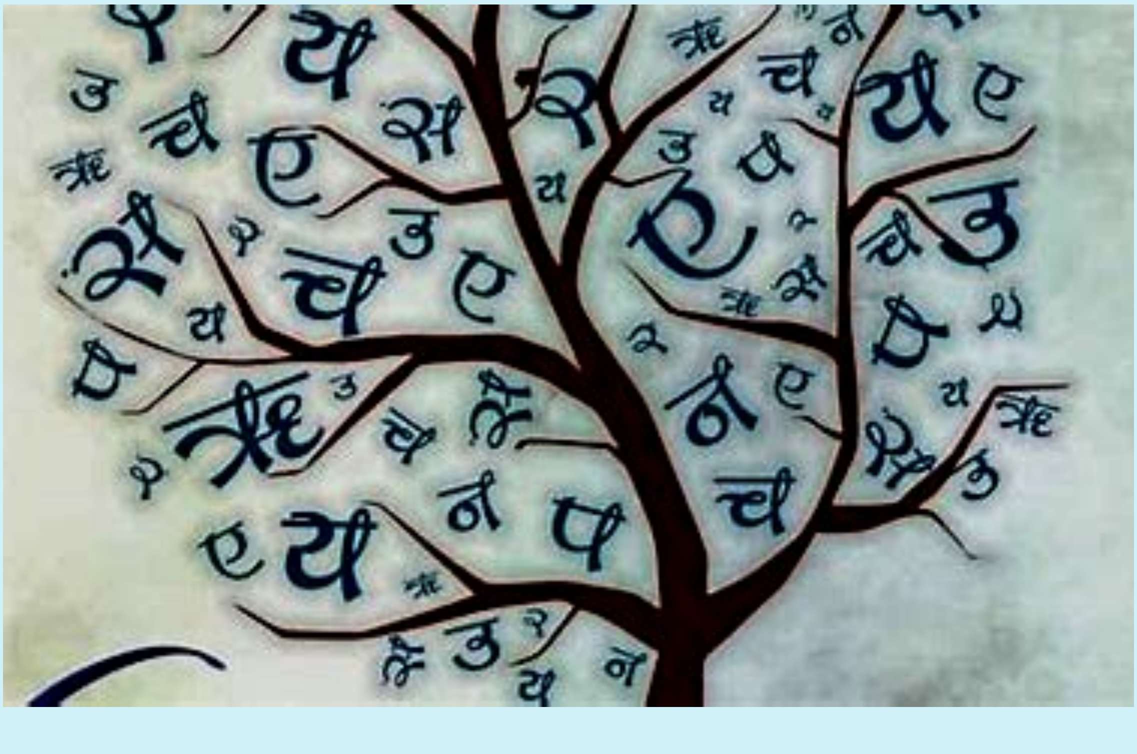

समय प्रबंधन- सुचारु व्यवस्था एवं सुखी जीवन का आधार

श्री धीरेन्द्र सिंह ,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत)

गत दिनों मेरे मित्र का फोन पर संदेश आया कि हमारे एक अन्य मित्र के बेटे का ट्रेन दुर्घटना में दुखद निधन हो गया इस हृदय विदारक घटना के विवरण का विश्लेषण करने पर पता चला पता चला कि उनका लगभग 40 वर्षीय पुत्र उसके परिवार के साथ पैतृक गांव जाने हेतु चलती हुई ट्रेन चढ़ते समय फिसल कर पटरी पर गिर गया था घटना दुखद तो थी लेकिन इसका मूल कारण रेलवे स्टेशन समय से ना पहुंच पाना था ।हम में से अधिकांश लोग समय का महत्व नहीं समझते और ऐसा मानते हैं कि उनके पास समय ही समय है जबकि यह हर पल घट रहा होता है कबीर दास जी ने इस संदर्भ में कहा है कि "कल करे सो आज कर, आज करे सो अब , पल में प्रलय होएगी, बहुरी करेगा कब" । इस दोहे में कार्य को इसी समय वर्तमान में शुरू करने के लिए कहा गया है क्योंकि यही वर्तमान वास्तव में आने वाले समय का आधार बनता है जिससे अच्छे या बुरे परिणाम का जन्म होता है अधिकतर लोग समय का मूल्य नहीं समझते और ऐसा मानते हैं की समय हमेशा उपलब्ध रहेगा इस प्रकार के लोगों का विचार कबीर के ठीक उलट होता है उनके अनुसार "आज करे सो काल कर काल करे सो परसों जल्दी-जल्दी क्यों करता है जब जीना है बरसों" । इस विचारधारा के चलते काम को टालना, बहुत सारे काम एक साथ हाथ में लेना, प्राथमिकताओं को तय नहीं करना और अव्यवस्थित रहना जैसी अनियमित गतिविधियों का जीवन में प्रवेश होता है जिसकी परिणीति असफलता एवं दुख में होती है जबकि वास्तव में यह समय की बर्बादी का परिणाम होता है तो इसे रोकने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। हर सुबह उठते ही दिन भर में किए जाने वाले नियमित एवं आकस्मिक कार्यों हेतु समय का प्रावधान किया जाना चाहिए प्रत्येक मनुष्य की एक निश्चित दिनचर्या होनी चाहिए जिससे समय के हर पल का सदुपयोग हो सके। ऐसी योजनाएं एवं प्राथमिकताएं बनाई जाना चाहिए जिसमें दैनिक सामाजिक,साप्ताहिक, मासिक एवं वार्षिक आधार पर किए जाने वाले व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक कार्य शामिल हो ताकि इन्हें समय पर पूरा ठीक प्रकार से किया जा सके आकस्मिक कार्य हेतु भी समय का प्रावधान होना चाहिए ताकि सामाजिक सरोकारों का भी उचित निर्वाह हो सके। व्यक्तिगत कार्य जैसे दैनिक क्रियाये, सुबह का घूमना साफ सफाई, घरेलू व्यवस्था मे सहयोग से संबंधित कार्य इत्यादि सुगमता से किये जा सके। इन सभी कार्यों में समय लगता है एवं इसमें हुई देरी पूरे व्यक्तिगत एवं सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है । समयबध जीवन शैली सभी कार्यों को समय पर कर सकती है यदि देर से उठते हैं तो ना तो व्यक्तिगत कार्य समय पर होंगे और ना ही पारिवारिक एवं सामाजिक कार्य हेतु समय मिलेगा जिसके परिणामस्वरूप असंतुष्ट एवं अव्यवस्थित स्थिति का सामना करना पड़ेगा। व्यर्थ की भाग दौड़ एवं तनाव जन्म लेगा अतः दिन भर में किए जाने वाले कार्यों की सूची तैयार करें एवं प्राथमिकता के आधार पर उसे निपटाए इससे मस्तिष्क सक्रिय एवं मन में उत्साह रहेगा कार्य पूरा होने की खुशी भी मिलेगी अपने परिवारजनों एवं मित्रों का सम्मान भी मिलेगा। समय बर्बाद ना हो। इस प्रकार बचे हुए समय को मनोरंजन, अपने मित्रों परिवार जनों के साथ बिताये ।

अंडमान-निकोबार सैर- सपाटा

श्रीमती स्वीटी सिंह
पत्नी श्री शशी भूषण ,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ऐसे तो मुंबई शहर सात टापुओं से बना शहर है लेकिन कभी किसी भी रूप में यह पता ही नही चला है कि इसके सात टापुओं की अवस्थिति तथा सीमांकन क्या है। बस छोड़िये। जैसे हो, हमारे पतिदेव द्वारा यह चर्चा की गई कि कोरोना महामारी अब सामान्य हो चुकी है और भारत में अब कहीं भी घुमा जा सकता है। इसी दरमियान हमारें पुत्र ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के सैर-सपाटे के बारें में अपने मन की बात बोली और उस दिन वहां के सैर सपाटे की बात आई गई हो गयी। फिर कुछ दिन मेरे पति द्वारा कुछ आर्थिक गणना और यात्रा छुट्टी रियायत के रूप में सरकार द्वारा उपलब्ध आर्थिक सुविधा के मद्देनजर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह घूमने के कार्यक्रम को अंतिम रूप से सभी ने हामी भर दी।

बस अब मेरे मन में पुन: ऐसी कल्पना आने लगी कि मुंबई के सात टापुओं को न मै देख पायी और ना ही गिन पायी क्योंकि यहां आधार अवसंरचना के विकास के कारण सात टापु कहने और सुनने की बात रह गई है लेकिन अंडमान निकोबार के टापुओं की सैर और गिनने का विचार मन में हिचकोले लेने लगा। ऐसा लग रहा था कि टापु इतने पास होगें कि प्रतिदिन दस टापुओं की सैर कर वहां के प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन जरूर कर पाऊंगी और पांच दिन के टूर के दौरान पचास टापुओं का सैर सपाटा निश्चित रूप से हो जाएगा। उत्सुकता वश मैने कुछ जानकारी इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश की तो पता चला कि कुल मिलाकर यहां पांच सौ बहतर द्वीप हैं जिनमें से कुछ निर्जन है जहां कोई आबादी नही है और कुछ समुद्र के नीचे चले गए हैं। सिर्फ तीस से चालीस द्वीप ही ऐसे है जहां अवासीय जनसंख्या है औऱ 15-20 पर ही प्रवासियों को ही घुमने की इजाजत है। मैने इस बार अपने पति से इस बात की चर्चा की कि आखिर घुमना कहां कहां है। अब लगभग घुमने का कार्यक्रम पूर्णत पक्का हो चुका था तब मेरे पति देव द्वारा बताया गया कि 3-4 द्वीप ही निर्धारित समय तथा बचत के हिसाब से घूम सकते है और अंतत: पोर्ट ब्लेयर जो अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी है, हैवलोक द्वीप जिसे अब स्वराज द्वीप कहते है और रौंस द्वीप जिसे अब सुभाषचंद्र बोस द्वीप के नाम से जाना जाता है, का नाम पक्का हो चुका था।

कार्यालय की प्रक्रिया पूरी होते ही हमें हमारे पतिदेव द्वारा बताया गया कि दिसंबर में अंडमान निकोबार के टूर पर चलना है। अंतिम रूप से निर्णय होने के बाद अब बच्चों में बहुत कौतुहल था। हवाई यात्रा की टिकट हमारी बुक हो चुकी थी। हमारी यात्रा मुंबई से चैन्नई और चैन्नई से पोर्टब्लेयर निर्धारित थी। जैसे जैसे प्रस्थान का समय नजदीक आ रहा था, वैसे वैसे मानों लग रहा था कि हमारी एक छोटी सी विदेश यात्रा है और विदेश यात्रा की अनुभूति हो रही थी। हो भी क्यों ना, आखिर यह अपने देश के मुख्य स्थल से 1100 किलोमीटर कि दूरी पर था जबकि हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका और मालद्वीप भी मुख्य स्थानीय भूमि से इतनी दूर नहीं है। 20 दिसंबर 2022 का वह अविस्मरणीय दिन वह क्षण था जब मुंबई से चैन्नई के लिए गोएयर का विमान पकड़ा और चैन्नई होते हुए पार्टब्लेयर के वीर सावरकर हवाई अड्डा पर उसी दिन पहुंच चुके थे। खुशी का कोई ठिकाना नही था अपने परिवार के साथ पोर्टब्लेयर द्वीप पर जो किसी सपने के सच होने के जैसा था। पोर्टब्लेयर पहुंच कर होटल में दोपहर का भोजन करने के बाद निर्धारित समय अनुसार प्रथन दिन के सैर सपाटे पर निकल चुके थे।

.के बाद निर्धारित समयानुसार प्रथम दिन के कार्यक्रम में ऐतिहासिक सैलुलर जेल का घुमना तय हुआ था। आजादी से पहले इसका उपयोग स्वतंत्रता सैनानियों को कैद करने के लिए किया जाता था जिसको काला पानी की सजा के रूप में जाना जाता है। देश के आजाद होने के बाद इसे ऐतिहासिक भवन के रूप में लोगों के दर्शन के लिए खोल दिया गया जहां एक बड़े संग्रहालय का निर्माण भी किया गया है। ऐतिहासिक स्थलों पर घुमने एवं उपलब्ध जानकारियां प्राप्त करने में 6-7 घंटे भी कम पड़ेगे। इस जेल में आजादी के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी बटुकेश्वर दत्त, सोहन सिंह औऱ वीर सावरकर इत्यादि माँ के वीर सपूतों को कैद करके रखा गया था। यह भारत की मुख्य भूमि से इतनी दूर है कि एक बार कोई वहां पहुंच जाए तो बिना ठोस सहायता तथा आवागमन के साधन के आना मुश्किल था मानो जिंदगी खत्म हो जाती थी।

इसका निर्माण 1896 में शुरू हुआ था और 1906 में पूर्ण हुआ था। इसका भवन एक वृतिय केंद्र से 51 डिग्री के बराबर अंशो में सात विंगस में समविभाजित है, इसका रंग पियूष रंग है तथा वर्मा से लाई गई ईंटों से बना है। इस जेल में लगभग 694 कमरे है जो करीब आठ फुट आकार के है। यहां के संग्रहालय से स्वतंत्रता सैनानियों के बारे में राज्यवार जानकारी मिलती है तथा बर्बरतापूर्ण किए गए अत्याचारों के बारें में अलग-2 जगह पर बताया गया है। इसी दिन कार्विन कोब्रा समुद्र तट जो हरें भरें वृक्षों से घिरा एक सुंदर तथा रमणीय समुद्रतट है, वहां सूर्यास्त की प्राकृतिक छटा का सपरिवार आनंद लिया।

पोर्ट ब्लेयर के नजदीक रोंसद्वीप है जिसे नेताजी सुभाषचंद्र द्वीप के नाम से जानते है, का सैर सपाटा हुआ। यह द्वीप सुंदर हिरण और छोटे-2 पशु-पक्षियों के लिए जाना जाता है। तीसरे तथा चौथें दिन के कार्यक्रम में हैवलॉक द्वीप जिसे स्वराज द्वीप के नाम से जाना जाता है,पर घूमना तय था। यह पोर्टब्लेयर से 60 किलोमीटर की दूरी पर है और छोटे जहाजों द्वारा ही यात्रा करनी पड़ती है। हमारी यात्रा दिन के दस बजे ग्रीन ओसन नामक जहाज के द्वारा शुरू हुई जिसके अपर डैक पर संगीत तथा अल्पाहर की व्यवस्था थी। 2-3 घंटे की यात्रा में हमें लगा कि हम एक अलग दुनिया में है, जहां पानी ही पानी है और स्थल नाम की कोई चीज नही है। इसका पानी एकदम साफ-सूथरा स्वस्थ तथा नीले हरे रंग का था जिसमें पांच मीटर गहरे पानी में आसानी से देखा जा सकता था। स्वराज द्वीप लगभग दस हजार एकड़ में फैला था जहां विश्व प्रसिद्ध राधा नगर समुद्रतट है जिसे 2004 में एशिया का सबसे सुंदर तथा स्वच्छ द्वीप घोषित किया गया है। इस बीच पर हम 5-6 घंटे तक बगैर थके घूमने का आंनद लेते रहें। इसके बाद काला पत्थर गोप के पास काला पत्थर समुद्र तट पर जाकर वहां के अद्वितीय प्राकतिक दृश्य का आंनद लिया। इसके अगले दिन समुद्र के अंदर की दुनिया देखने का कार्यक्रम था जहां हमने स्कूबा ड्राईविंग द्वारा समुद्र के अंदर जंतु तथा पादप का नंगी आंखो से दर्शन किया। स्वराज द्वीप का ही भाग है और स्वराज द्वीप की मुख्य पट्टी से पांच किलोमीटर की दूरी पर है। यहां पर समुद्र तट पर छोटी छोटी मशीनीकृत नाव, पनडुब्बी, वाटर राइडस पैरा ग्लाइडिंग इत्यादि हैं जहां दिन भर भी कम पड़ता है।

इसके बाद तुरंत सुबह के अल्पाहार के बाद एलिफैंट बीच जो अब हमारें अंडमान-निकोबार के पांच दिन के सैर सपाटे की यात्रा का अंतिम चरण था। शाम के छह बजे ग्रीन ओसन जहाज से स्वराज द्वीप होते हुए पोर्ट ब्लेयर की ओर प्रस्थान किया और करीब रात के नौ बजे पोर्ट ब्लेयर पहुंच गए।

हमारा यात्रा वृतांत हमारें सुखद समुद्री अभियान का एक छोटा सा अनुभव है, भारत सरकार ने वहां के प्रमुख 21 द्वीपों को नाम परमवीर चक्र प्राप्त भारत के वीर सपूतों के नाम पर रखा है जो कि प्रशंसनीय है। अब हमारी यात्रा का अंतिम चरण था और 26 दिसंबर 2022 को दोपहर 2 बजे वीर सावरकर हवाई अड्डा से प्रस्थान कर उसी दिन चैन्नई होते हुए मुंबई के छत्रपति महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पर पहुंचकर समाप्त हो गई। यह वास्तव में मेरी जिंदगी का सुखद तथा अविस्मरणीय पल था।

गुमनाम शहीद को नमन

श्रीमती अर्चना सिंह

पत्नी श्री अरूण कुमार सिंह,स.ले.प.अ

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय है इसकी गणना आधुनिक विश्व के सबसे बडे आन्दोलनों में की जाती है यह अपने आप में अद्वितीय इस लिए है क्योंकि विभिन्न विचारधाराओं और वर्गों के करोड़ो पुरुष और महिलाओं ने मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लम्बा संघर्ष किया और आज़ादी दिलाई। इन्ही में से एक गुमनाम शहीद थे,नरसिम्हा रेड्डी ! आज जब हम अपनी आजादी के 75 वर्ष पुरे कर लिए हैं और हम इसे आज़ादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं ऐसे समय में भारत माँ के इस पहले देशभक्त वीर सपूत जिसने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन के खिलाफ हथियारबंद विद्रोह किया, को याद करने का सुनहरा अवसर है. उन्होने आँध्रप्रदेश के रॉयलसीमा क्षेत्र में किसानों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाई और अंग्रेज़ों से लोहा लिया।

नरसिम्हा रेड्डी का जन्म 24 नवंबर, 1806 में उय्यालवडा, जिला कुर्नूल, आंध्र प्रदेश के एक सैन्य परिवार में हुआ था। उनका पूरा नाम उय्यलावडा नरसिम्हा रेड्डी था। उनके दादा का नाम जयारामी रेड्डी तथा उनके पिता का नाम उय्यलावडा पेडडामल्ला रेड्डी था। रायलसीमा के क्षेत्र पर ब्रिटिशों ने अधिकार करने के बाद रैयतवाड़ी व्यवस्था की शुरुआत की। इस व्यवस्था से अंग्रेजो को कर के रूप में काफी पैसा मिलता था। इस व्यवस्था के तहत अंग्रेजों और किसानों के बीच सीधा समझौता था। इसमें किसानों को कर सीधा ब्रिटिश कंपनी को देना होता था। लेकिन अगर कोई किसान कर नहीं दे पाता था तो कंपनी उसकी जमीन छीन लेती थी।

नरसिम्हा रेड्डी जिनके पुरखे इस क्षेत्र में कर वसूलने का कार्य करते थे, ने रैयतवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत अंग्रेजों के साथ इस क्षेत्र की आय को साझा करने से इनकार कर दिया था। वह एक सशस्त्र विद्रोह के पक्ष में थे। वह युद्ध में गोरिल्ला रणनीति का इस्तेमाल किया करते थे। 10 जून, 1846 को उन्होंने कोइलकुंटला में खजाने पर हमला किया और कंबम में विद्रोह कर 5 हजार किसानों को साथ लेकर नरसिम्हा ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। वे अंग्रेजों के खजानों को लूटने लगे। उस खजाने को वे गरीबों में बांट देते थे। नरसिम्हा का बढ़ता रुतबा देख अंग्रेज परेशान हो गए थे। ऐसे में उन्होंने नरसिम्हा को खत्म करने की ठान ली।

ब्रिटिश सरकार ने नरसिम्हा रेड्डी की सूचना देने वाले को 5000 रुपये और उनके सिर के लिए 10000 रुपये देने की घोषणा की, जो उन दिनों में एक बड़ी रकम थी। 23 जुलाई, 1846 को नरसिम्हा रेड्डी ने अपनी सेना के साथ गिद्दलूर में ब्रिटिश सेना के ऊपर आक्रमण कर दिया और उन्हें हरा दिया। नरसिम्हा रेड्डी को पकड़ने के लिए ब्रिटिश सेना ने उनके परिवार को कदपा में बन्दी बना लिया। अपने परिवार को मुक्त करने के प्रयास में वह नल्लामला वन चले गए। जब अंग्रेजों को पता लगा की वह नल्लामला वन में छिपे हैं, तब अंग्रेजों ने अपनी गतिविधियों को और ज्यादा मजबूत कर दिया, जिसके बाद नरसिम्हा रेड्डी कोइलकुंतला क्षेत्र में वापस आ गए और मौके का इंतजार करने लगे।6 अक्टूबर, 1846 को आधी रात के समय उन्हें गिरफ़्तार करके बन्दी बना लिया गया। कोइलकुंतला में उनके पकड़े जाने के बाद उन्हें बुरी तरह से पीटा गया, उनको मोटी-मोटी जंजीरों से बांधा गया था और कोइलकुंतला की सड़कों पर खून से सने हुए कपड़े में ले जाया गया ताकि किसी अन्य व्यक्ति को ब्रिटिश के खिलाफ विद्रोह करने की हिम्मत ना हो सके।

 नरसिम्हा रेड्डी के साथ विद्रोह करने लिए 901 लोगों पर भी आरोप लगाया गया। इसके बाद में उनमें से 412 लोगों को बरी कर दिया गया और 273 लोगों को जमानत पर रिहा किया गया। 112 लोगों को दोषी ठहराया गया। उन्हें 5 से 14 साल के लिए कारावास की सजा सुनाई गई। कुछ को तो अंडमान द्वीप समूह की एक जेल में भेज दिया गया। बाकी को दोषमुक्त घोषित किया गया।

नरसिम्हा रेड्डी पर हत्या और राजद्रोह करने का आरोप लगाया गया और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। छः सप्ताह बाद उन्हें सार्वजनिक रूप से जुर्रेती बैंक, कोइलकुंटला, जिला कुर्नूल में सुबह 7 बजे, सोमवार, 22 फरवरी, 1847 को फांसी दी गई। नरसिम्हा तो शहीद हो गए लेकिन वे लोगों के मन में क्रांति की ज्वाला जगा गए। उनकी लोकप्रियता इस बात से सिद्ध होती है कि फांसी को देखने के लिए करीब दो हजार लोग उपस्थित थे।

रॉयलसीमा के इस स्वतंत्रता सेनानी ने ब्रिटिश सेनाओं में इतना भय पैदा कर दिया था कि ब्रिटिश सेना ने उनकी मृत्यु के बाद भी उन्हें सार्वजनिक रूप से फांसी दी और उनके शव को लोगों को दिखाने के लिए तीस वर्ष तक पिंजरे में रखा।

नरसिम्हा रेड्डी द्वारा बनाए गए किले आज भी उय्यलावडा, रूपनगुड़ी, वेल्ड्रथी और गिद्दलुर जैसे स्थानों पर मौजूद हैं। प्रथम स्वतंत्रता सेनानी उय्यालवडा नरसिम्हा रेड्डी की 170वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 22 फ़रवरी, 2017 को उय्यालवडा में एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया था।

अपनी मातृभाषा में अपने विचारों की अभिव्यक्ति ही वास्तविक स्वतंत्रता है

गणपति उत्सव

श्री हरिदास भूरे

लेखापरीक्षक

गणेश उत्सव भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है किन्तु महाराष्ट्र और कर्नाटक में इसकी भव्यता देखते ही बनती है। गणेश चतुर्थी पर हिंद भगवान गणेश जी की पूजा की जाती है। मुंबई में यह त्यौहार हर घर और मोहल्ले में मनाया जाता है। हिंदु धर्म में इस दिन को विनायक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है। गणेश जी समृद्धि और ज्ञान के देवता हैं। हाथी के सिर वाले देवता गणेश के जन्म का यह 10 दिवसीय त्यौहार होता है।

गणेश चतुर्थी के सार्वजनिक उत्सव की शुरूआत सन 1893 में पुणे में बाल गंगाधर तिलक द्वारा की गई थी। इस उत्सव की शुरूआत उनसे पहले शिवाजी महाराज के बाल्यकाल में उनकी माता जीजाबाई द्वारा की गई थी। आगे चलकर पेशवाओं ने इस उत्सव को बढ़ाया और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इसे राष्ट्रीय पहचान दिलाई। महाराष्ट्र में इस उत्सव की अलग ही छटा बिखरती है। इस उत्सव के आते सारा वातावरण नाना प्रकार की सुगंधो से महकने लगता है और कोई गली , कोई सड़क और कोई सड़क ऐसी नही होती जहां आपको इसका अनुभव ना हो। घर, दुकाने और प्रतिष्ठान गणेशमय हुए नजर आते है। आर्थिक दृष्टि से भी इस उत्सव का अपना महत्व है। इस उत्सव के दौरान सभी लोग अपनी क्षमता अनुसार कुछ न कुछ नया खरीदते है, बाजारों की रौनक बढ़ जाती है, काम धंधे एक नई रफतार पकड़ लेते है जिससे बाजार में पूंजी का प्रवाह बढ़ जाता है औस सभी को कुछ ना कुछ कमाने का मौका मिलता है। बप्पा अपने भक्तों को निहाल करके जाते है अगले बरस भी वापिस आने के लिए।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार गणेश का जन्म भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी में हुआ था। गणेश जी के अनेक नाम है लेकिन ये नाम प्रमुख हैं – सुमुख, एकदंत, कृपिल, गजकर्णक, लंबोदर, विकट, विघ्न-नाश, भालचंद्र, विनायक,धूम्रकेतु,गणाध्यक्ष,भालचंद्र, गजानन। दस दिनों तक चलने वाला यह उत्सव न केवल भगवान गणेश का जन्मदिन मनाता है बल्कि एक सामाजिक एवं सामुदायिक कार्यक्रम भी है जो लोगों को एक साथ एक मंच प्रदान करता है , उस समय कोई छोटा बड़ा नही होता, कोई जाति-पाति नही होती, जो होता है तो सिर्फ भगवान विनायक की असीम भक्ती और गणपति बप्पा के जयकारों से गूंजते पंडाल जहां भक्तजन अपनी खाली झोली फैलाकर अपने भगवान से अपने लिए सुख-समृद्धि ही नहीं मांगते है अपितु विश्वशांति हेतु प्रार्थना भी करते हैं। इन10 दिन के दौरान गणेश जी मानो साक्षात धरती पर आकर अपने भक्तों को अनन्य सुख प्रदान करते है। अत: में भक्त ढोल नगाड़ों के साथ विनायक को विदा करते है ,मन में एक ही आस व आस्था लेकर कि -

“ गणपति बप्पा मौरेया –अगले बरस तु जल्दी आ। ”

विक्रम

श्रीमती शिखा कुमारी
लेखापरीक्षक

आधुनिक युग में किसी भी देश के विकास में वैज्ञानिकों का योगदान अहम है। हमारे देश में भी अनेक वैज्ञानिक हुए है। जिन्होंने अपने कार्यों से देश को नयी ऊंचाईयों तक पहुंचाया। ऐसे ही एक वैज्ञानिक हुए है डा. विक्रम अंबालाल साराभाई_ , जिन्हें हम " डा. विक्रम साराभाई " के नाम से भी जानते हैं। डॉ. विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है। उन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को दिशा प्रदान की।

डॉ॰ विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त, 1919 को गुजरात में हुआ था। उनके पिता अंबालाल साराभाई एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर प्राप्त करने के साथ ही उन्होंने बागवानी, तकनीकी, भाषा, विज्ञान, नृत्य, संगीत, चित्रकला, फोटोग्राफी आदि की शिक्षा भी विशिष्ट रूप से प्राप्त की।

डॉ॰ साराभाई ने गुजरात कॉलेज अहमदाबाद से इंटरमीडिएट तक विज्ञान की शिक्षा पूरी करने के बाद 1937 में इंग्लैंड चले गए वहां उन्होंने कैम्ब्रिज में अध्ययन किया। भारत लौटने पर वे चन्द्रशेखर वेंकटरमन तथा होमी जहांगीर भामा के साथ अन्तरिक्ष विज्ञान पर कार्य करते रहें।
डॉ॰ साराभाई को अन्तरिक्ष अनुसन्धान कार्यक्रमों का जनक एवं सूत्रधार कहा जाता है। उन्होंने वैज्ञानिक उपलब्धियों को ग्राम, समाज व देश के हित में लगाने का सदैव विचार किया था।
डॉ. साराभाई ने ही भारत में अन्तरिक्ष कार्यक्रमों की शुरूआत की थी, जिसके फलस्वरूप कई भारतीय उपग्रह अन्तरिक्ष में छोड़े गए और सूचना एवं संचार के क्षेत्र में देश में अभूतपूर्व क्रान्ति का सूत्रपात हो सका। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) की स्थापना उनकी महान् उपलब्धियों में से एक थी। आज भारत की 70 प्रतिशत से भी अधिक गांव की आबादी अपने घरों में दूरदर्शन सेवा का लाभ उठा रही है। इसका पूरा श्रेय साराभाई को जाता है।

दूरदर्शन के माध्यम से शिक्षा, कृषि, विकास, मनोरंजन, खेल, चिकित्सा, सामाजिक सुधार आदि सभी क्षेत्रों में ग्रामीण लाभान्वित हो रहें हैं। उसके पीछे सारा श्रम साराभाई का ही है। भारतीय संस्कृति से उनका लगाव काफी गहरा था। थुंबा रॉकेट प्रक्षेपण कार्यक्रम के समय उनका आकस्मिक निधन हो गया। उनके कार्य आने वाले युवा वैज्ञानिकों को प्रेरणा देते रहेंगे।

डा. विक्रम साराभाई एक संस्थान निर्माता भी थे। उन्होंने विविध क्षेत्रों में अनेक संस्थाओं की स्थापना की। उन्होंने अनेक संस्थानों की स्थापना में सहयोग किया। अहमदाबाद में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

डॉ. साराभाई द्वारा स्थापित कुछ प्रसिद्ध संस्थानों के नाम इस प्रकार हैं:

• भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल), अहमदाबाद
• भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), अहमदाबाद
• सामुदायिक विज्ञान केंद्र, अहमदाबाद
• दर्पण अकाडेमी फ़ॉर परफ़ार्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद (अपनी पत्नी के साथ मिल कर)
• विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम
• अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अहमदाबाद (यह संस्थान साराभाई द्वारा स्थापित छह संस्थानों/केंद्रों के विलय के बाद अस्तित्व में आया था)
• फ़ास्टर ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर (एफ़बीटीआर), कल्पकम
• वेरिएबल एनर्जी साइक्लोट्रॉन प्रॉजेक्ट, कोलकाता
• इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल), हैदराबाद
• यूरेनियम कार्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल), जादूगुडा, बिहार

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन [इसरो] ने चंद्रयान-3 को 14 जुलाई 2023 को लॉन्च किया था। चंद्रयान -3 के लैंडर का नाम "विक्रम" जो कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डा. विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया है। यह एक चंद्र दिन के लिए कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया है,
अंतरिक्ष अभियानों के महत्व पर डा. विक्रम साराभाई के ये विचार आज भी प्रासंगिक लगते हैं:

"ऐसे कुछ लोग हैं जो विकासशील राष्ट्रों में अंतरिक्ष गतिविधियों की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हैं। हमारे सामने उद्देश्य की कोई अस्पष्टता नहीं है। हम चंद्रमा या ग्रहों की गवेषणा या मानव सहित अंतरिक्ष-उड़ानों में आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों के साथ प्रतिस्पर्धा की कोई कल्पना नहीं कर रहें हैं।" "लेकिन हम आश्वस्त हैं कि अगर हमें राष्ट्रीय स्तर पर, और राष्ट्रों के समुदाय में कोई सार्थक भूमिका निभानी है, तो हमें मानव और समाज की वास्तविक समस्याओं के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों को लागू करने में किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए।"

भाषा की व्यथा

श्री अशोक बिश्नोई
कनिष्ठ अनुवादक

भाषा तो भावों को व्यक्त करने का एक जरिया है चाहें वे मुंह से बोलें जाएं, लिखें जाएं या इशारों से ही क्यों ना हों। भाषा का विकास निश्चय ही किसी स्थान विशेष में लोगों ने आपसी संवाद के लिए किया होगा। कालांतर में बढ़ते वैश्विकरण से विभिन्न भाषा के लोगों का तालमेल बढ़ा और भाषा का निरंतर विकास होता चला गया।

फिर दौर आया जब हर कोई अधिक से अधिक शक्तिशाली बनने की होड़ में अपना आधिपत्य ज्यादा से ज्यादा जमाना चाहता था। इसी होड़ में एक क्षेत्र के दूसरे पर अधिक शक्तिशाली होने के क्रम में हुए नुकसान को अगर वहां के लोगों के अलावा किसी ने भोगा तो वह थी- भाषा और संस्कृति। भाषा अब मात्र भावों के व्यक्त करने का माध्यम न रह गई थी वरण अब इसे एक शक्ति या क्षेत्र के किसी अन्य क्षेत्र पर प्रभाव रूप में थोपा जाने लगा।

अतीत के इसी क्रम में ना जाने कितनी ही भाषाएं एवं संस्कृतियां दम तोड़ गई और ना जाने कितनी ही अपना इतिहास भी दर्ज ना कर सकी। औपनिवेशक काल में या बाहरी आक्रमणों में लंबे संघर्ष के चलते भारत भाषा व संस्कृतियों से अछूता रहा पर उनके प्रभाव से यहां के लोग भी वंचित न रह सकें। गुलामी को दौर में बाहरी भाषाओं के शासन प्रशासन के चलते उनका प्रभाव समां के साथ तंत्र की जड़ों में अंदर तक फैल गया।पूंजीवाद के दौर ने भी विशिष्ट भाषाओं के अध्यापन तथा लोगों में उनके प्रति झुकाव को और मजबूती दी जिसमें कुछ गलत नही है परन्तु परेशानी वहां आने लगी जब लोगों द्वारा भाषा विशेष को प्रतिभा के रूप मे स्वीकार किया जाने लगा जिसके परिणामस्वरूप लोग अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को हेय दृष्टि से देखने लगे। उनके मन में यह हीन भावना डाली गई या समय के साथ स्वत: ही विकसित हुई इसका आंकलन करना मुश्किल है।

आम लोग अपनी मातृ भाषा जिसको बोलकर उनका बचपन बीता था, उनकी शिक्षा हुई थी, वे अपनी संतानों को आज अपनी ही भाषा से परिचित तक नही करवा रहे जिससे कि उनके सफल होने के क्रम में उनकी अपनी विशिष्ट भाषा का ज्ञान बाधा ना बनें।कई महानुभावों ने इसी प्रभाव को कम करनेके लिए क्षेत्रीय भाषाओं को आम बोलचाल में ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने का प्रयास किया जोकि एक अच्छा प्रयास था परन्तु इस मुद्दे के राजनीतिकरण ने देश को कई ध्रुवों में बांटने का काम किया।लोगों को ना जाने यह ज्ञान किस स्रोत से प्राप्त हुआ कि अपनी भाषा की महानता दूसरी भाषा बोलने वालों से घृणा करने में ही है।

कई क्षेत्रीय पार्टियों ने भाषा के मुद्दे को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए ही दुहा है। भीड़तंत्र इतना प्रभावी हो जाता है कि लोगों को लगने लगता है कि किसी दूसरी भाषा विशेष के संपर्क में आने मात्र से ही उनकी अपनी भाषा संकट में आ जाएगी। शायद वे लोग भूल जाते हैं कि भाषा तो सहज रूप से स्वयं प्रभावमय रहने वाली एक सरिता है जो अपना रास्ता तुम में ,हम में और पूरे समाज में अपने आप बना लेती है।

राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है - अवनींद्र कुमार विद्यालंकार

"UPI: भुगतान के क्षेत्र में एक एकीकृत प्रणाली"

श्री प्रदीप रोहिल्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय वित्तीय प्रणाली में डिजिटलीकरण का एक महत्वपूर्ण कदम यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) है। यह एक विशेष प्रकार की तकनीकी प्लेटफ़ॉर्म है जिसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के डिजिटल पेमेंट्स को एक साथ आसानी से करने का है। यूपीआई ने विभिन्न वित्तीय सेवाओं को संघटित किया है और व्यक्तिगत पेमेंट्स से लेकर व्यापारिक सौदों तक को सुगमता से संभालने का अवसर प्रदान किया है। यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) को भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) द्वारा विकसित किया गया था जिसे भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और भारतीय बैंक संघ (RBI) द्वारा स्थापित किया गया था। यह वास्तविक समय, व्यक्ति से व्यापारी लेनदेन, अंतर-बैंक सहकर्मी से सहकर्मी लेनदेन को सक्षम बनाता है।

यूपीआई का उपयोग करते समय, उपयोगकर्ताओं को अपने बैंक खातों को संबंधित पेमेंट ऐप्स में जोड़ने की आवश्यकता होती है। इसके बाद, वे आसानी से विभिन्न प्रकार के पेमेंट्स को कर सकते हैं, जैसे कि पैसे भेजना, खरीददारी करना, बिल भुगतान करना आदि। इस प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए, यूपीआई प्लेटफ़ॉर्म अद्वितीय एक वर्चुअल पेमेंट आईडी (VPI) प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता को अपनी पूरी वित्तीय जानकारी बताने की आवश्यकता नहीं होती। यूपीआई के माध्यम से होने वाले पेमेंट्स तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक होते हैं। व्यक्तिगत पिन की आवश्यकता होती है ताकि पेमेंट्स की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके और किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी से बचा जा सके। यह बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों के बीच भुगतानों को आसान बनाता है और व्यापारिक लेन-देन को भी सुगम बनाता है। कोरोना काल मे कैश की कमी झेल रहे लोगो ने UPI का सहारा लिया व देखते ही देखते देश मे अधिकांश भुगतान UPI के जरिये होने लगे। भारत में डिजिटल भुगतान की सुविधा के लिए भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) द्वारा UPI की शुरुआत की गई थी, हालांकि, सफलता के साथ, NPCI ने वैश्विक योजनाओं के साथ UPI 2.0 लॉन्च किया है। जल्द ही, आप देखेंगे कि UPI को संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, भूटान, नेपाल आदि जैसे कई देशों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है।

UPI के कुछ फायदे तो कुछ नुकसान भी है जो निम्नलिखित है :

फायदे:

1. *त्वरित और सुरक्षित पेमेंट्स:* UPI की मुख्य बात यह है कि यह त्वरित और सुरक्षित भुगतान प्रदान करता है। यह बिना बैंक खाता खोले भी उपयोग किया जा सकता है और चोरी की संभावना को कम करता है।

2. *सुविधा का स्तर बढ़ाना:* UPI के माध्यम से भुगतान करने से लोगों को बैंक जाने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे उनकी समय और श्रम दोनों की बचत होती है।

3. *डिजिटल भारत की स्थापना:* UPI ने डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और 'डिजिटल इंडिया' की मिशन को आगे बढ़ावा दिया है।

नुकसान:

1. *साइबर आपत्तियों की संभावना:* जैसे-जैसे डिजिटल भुगतान बढ़ते हैं, साइबर आपत्तियों का खतरा भी बढ़ जाता है, जैसे कि फिशिंग, मैलवेयर, और अन्य ऑनलाइन धोखाधड़ी क्रियाएँ।

2. *डिजिटल असमर्थता:* कुछ भारतीय जनता के पास समर्थ डिवाइस नहीं है जिससे वे UPI का सही तरीके से उपयोग कर सकें, जिससे डिजिटल भुगतान की प्रक्रिया में असमर्थता का सामना करना पड़ सकता है।

भारत में UPI का भविष्य बहुत ही उज्जवल है जिससे डिजिटल पेमेंट्स को सरलता और तेज़ी से बढ़ावा मिला है और बैंकिंग सेवाओं तक पहुंचने में मदद मिल रही है। इस तकनीक ने लोगों को वित्तीय संदर्भों में स्वतंत्रता और सुरक्षा प्रदान की है। भविष्य में, UPI के उपयोग में और भी विस्तार होने की सम्भावना है, जैसे कि ई-कॉमर्स, डिजिटल सेवाएँ, और वित्तीय समृद्धि कार्यक्रमों में इसका उपयोग को उत्तरोतर समर्थन।

यह उदार वित्तीय समृद्धि की दिशा में भारत का एक महत्वपूर्ण कदम है और भारतीय अर्थव्यवस्था को डिजिटल स्पेस में विकसित करने में वास्तव में मील का पत्थर साबित होगा और उपयोगकर्ता की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यह भारतीय वित्तीय प्रणाली का मुख्य हिस्सा बन सकता है। अब शायद समय आ चुका है जब हमारी अर्थव्यवस्था एक नए प्रगति पथ पर बढ़कर विश्व में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगी।

मन के भावों को व्यक्त करने के लिए मातृ भाषा से अधिक क्षमता
किसी अन्य भाषा में नहीं है।

जीवन द्वंद

श्री सतेन्द्र कुमार
लेखापरीक्षक

बचपन से बड़ें होने के क्रम में हम सभी ने यह पंक्ति ना जाने कितनी ही बार कितने ही लोगों से सुनी है कि “आज में जिओ” । पर क्या व्यवहारिक जीवन में किसी ने इस क्रम में जीवन को जिया । नोस्टालजिया/अतीत की याद अथवा भविष्य के सुनहरे सपनों से भला कौन अछूता रहा होगा।

बचपन के जिन दिनों में एक बच्चा रोज-रोज स्कूल जाने, गृहकार्य करने और अध्यापक की डाँट खाता हुआ अवश्य सोचता ही है कि युवावस्था शायद कितनी ही मजेदार रहती होगी, ना रोज सुबह की मीठी नींद को छोड़कर स्कूल जाने का झंझट, ना गृहकार्य एवं इस पीढी से पूर्व के बच्चों की सबसे बड़ी समस्या जो अध्यापक से मार खाना थी। भविष्य के इसी सुनहरे सपने को लिए वह अबोध भविष्य में आने वाली दुनियादारी की ठोकरों से अनजान नितांत आगे बढता चला जाता है। यह “पैरेलल यूनिवर्स” भी बढती उम्र के साथ उतनी ही विकसित और इच्छाएँ उतनी ही प्रबल होती जाती है।

विद्यालय और महाविद्यालय का समय दोस्तों और परिवारजनों के साथ ऐसा होता है कि समय का चक्र यदि रोक सकते तो हर कोई शायद अपने इसी दौर को जी रहा होता। पर जो “पैरेलल यूनिवर्स” उसने दिमाग में भर रखी है, वास्तविकता उससे कही अधिक कठोर और कड़वी होती है। अब वह जीवन के उस मोड़ पर है जहाँ उसे जीवन को आगे की दिशा देनी है पर वो सुनहरा अतीत जो आपसे अब छूटा जा रहा है उसको रोके रखने की जद्दोजहद। कुछ दिनों पहले जो अबोध बालक अपने बचपने में जीवन की सावनरुपी फुँहारों में मस्त था, एकाएक अब वह बेरोजगारों की श्रेणी में आ गया। अब उससे “मैच्योर डिसीजन” लेने की अपेक्षा की जाती है। यह तथाकथित “मैच्योरिटी” कहाँ से आएगी, यह तो स्कूल, कॉलेज या कोचिंग सेंटर वालों ने नहीं सिखाई। इस मोड़ पर शिक्षा किताबों से ज्यादा जीवन के अनुभवों से ही मिलने वाली थी जिसमें उलझा हुआ वह फिर से आज में ना जी कर उसी बेपरवाही वाले बचपन को याद कर रहा है। अब वह घर से पैसे माँगने में भी कतराने लगा है शायद अपनी जिम्मेदारी को समय पूर्व ही समझने लगा है और उसने यह स्वीकार कर लिया है कि जब तक वह आर्थिक रुप से सक्षम नहीं हो जाता उस पर दबाव बना रहेगा। इसी प्रयास में उसकी कोशिश जारी है, माँ – पिता भी शुभ समाचार सुनने के लिए अधीर है, हो भी क्यों ना, सारी उम्र जो सिखाया, कमाया अब उसके परिणाम का समय है।

युवा भी शायद अब डरने लगा है, भविष्य की असुरक्षा तथा आशाओं के बोझ से बचपना ना जाने कब का पीछे छुट गया, दोस्त छुटने लगे है, वो मस्ती मजाक अब अच्छा नहीं लगता। लगन है तो बस एक ही कि नाम कमाना है और पैसा भी।

समय भी करवट लेता है, जिस आत्मनिर्भरता के लिए सभी प्रतीक्षा में थे, वह भी पूर्ण होती है। पंसद या नापंसद अब प्राथमिकता नहीं रह जाती है, पैशन की बातें मानो हवा हो गई है। लड़का अब कमाऊ हो गया है कि घर-परिवार के लिए कुछ कर पाएगा, जिम्मेदारी का अहसास स्वतः ही उसके अंदर आ गया है। सब कुछ अच्छा चल रहा है पर जो सपने बेरोजगारी के समय देखे थे कि पैसा आएगा तो शौक पूरे किए जाएंगे। लेकिन अब कुछ करने का मन ही नहीं है। पैसा वो आनंद नहीं दे पा रहा है जिसकी उसकी अपेक्षा की थी। गोल घूमती सुइयां बीत रहे क्षणों का मानो मजाक बना रही हो। घूमना अब अच्छा नहीं लगता , दोस्त जो पीछे छूट गए हैं। फिर भी आज में जीने की चेष्टा जारी है।

भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है - लोकमान्य तिलक

परीक्षाओं में पारदर्शिता का महत्व

श्रीमती रितु रोहिल्ला
पत्नी श्री प्रदीप रोहिल्ला,सलेअ

परीक्षाएं हमारे शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और पारदर्शिता इन परीक्षाओं में एक महत्वपूर्ण विषय है। पारदर्शिता का मतलब होता है कि परीक्षा प्रक्रिया को न्याय और संहिता के साथ संचालित किया जाना, मतलब परीक्षा प्रक्रिया मे कुछ भी छिपा ना हो। पारदर्शिता का पालन करने से परीक्षाओं के प्रति विश्वास मजबूत होता है क्योंकि छात्र और उनके अभिभावकों को सत्य और सही जानकारी मिलती है। यह उनके अध्ययन में संयम, निष्ठा और मेहनत की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आजकल लगभग सभी देश व राज्य स्तरीय परीक्षाओ मे प्रशनपत्र के साथ आन्सर शीट की कॉपी भी दी जाती है जिस से परीक्षार्थी अपने सही व गलत उत्तरो का मिलान कर लेते है। इससे वह अपने मजबूत व कमजोर पक्ष को जान पाते है व आगामी परीक्षा मे अपने कमजोर पक्ष पर महनत कर बेहतर प्रदर्शन कर पाते है ।

पारदर्शिता के बिना, अवैध प्रयासों और चीटिंग का खतरा बढ़ जाता है, जिससे सत्यापन की प्रक्रिया को कमजोर किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप, अध्ययन करने वाले छात्रों को न्याय की भावना में कमी होती है और वास्तविक योग्यता की पहचान मुश्किल होती है। इससे योग्य छात्र पीछे छूट जाते है ।

परंतु अभी भी कई परीक्षाओ, खासकर सरकारी नौकरियों मे विभागीय परीक्षाओ मे पारदर्शिता की कमी नज़र आती है । गोपनीयता के नाम पर पारदर्शिता की बलि दी जाती है । प्रशनपत्र व आन्सर शीट की प्रति परीक्षार्थोयों को नही दी जाती है जिससे परीक्षार्थी अपने कमजोर पक्ष को नही जान पाते व साथ ही विभागीय परीक्षाओ के लिए उनके विश्वास मे कमी आती है।

पारदर्शिता लाने के लिए, परीक्षा प्राधिकृत और सशक्त तरीके से आयोजित होनी चाहिए। उपयुक्त निरीक्षण और उपरांत विश्लेषण से यह सुनिश्चित करना चाहिये कि परीक्षाओ का मूल उदेशय पूरा हो जिससे छात्रों को उनकी साक्षरता और योग्यता में बढ़ावा मिलने मे मदद हो । योग्य छात्र का चुनाव हो व उसे आगे बढ़ने का मौका मिले ।

विभिन्न परीक्षाओं में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए डिजिटल क्रांति का सहयोग एक महत्वपूर्ण रूप में परिणामकारी सिद्ध हो रहा है जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से परीक्षाओं का ऑनलाइन आयोजन, ऑनलाइन परिणाम व परिणाम मे विद्यार्थियो से आपतियों की मांग व उनमे सुधार।

अच्छी पारदर्शिता से, हमारे शिक्षा प्रणाली का स्तर ऊंचा होता है और छात्रों को अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण मिलता है। इससे वे अपनी योग्यता को सुधारते हैं और समाज में अच्छे नागरिक बनते हैं।

चंद्रयान-3

“झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा”
और
“सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा”

कु.दुर्वा अर्जुन कामठे
पुत्री श्री अर्जुन कामठे, लेखापरीक्षक

यह पंक्तियाँ आज सही रूप से सार्थक हुई है। आज मै आप सभी से एक महत्वपूर्ण विषय- **चंद्रयान-3** पर कुछ जानकारी शेअर करना चाहती हूँ।

चंद्रयान-3----------- चंद्रयान-3 यह एक भारत की ओर से चलाया गया एक महत्वपूर्ण अंतरिक्ष मिशन है जोकि 10 से 15 वर्षों की लगातार कड़ी मेहनत के बाद दोबारा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन अर्थात इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन **(ISRO)** द्वारा जारी किया गया है। इससे पहले भी भारत सरकार द्वारा दो बार चांद पर यान भेजा गया है। **चंद्रयान-1,** 2008 में चांद पर भेजा गया था। यह मिशन पूरी तरह सफल रहा था। इसके बाद दोबारा चांद पर 2019 में चंद्रयान भेजने की कोशिश की गई थी, लेकिन यह मिशन किसी तकनीकी समस्या के कारण असफल रहा था। अब तीसरी बार यह **चंद्रयान-3,** अपने भारत देश का झंडा फहराने का सपना देखते हुए दिनांक 14 जुलाई 2023 को दोपहर 2:51 पर सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्री हरिकोटा से लॉन्च **(launch)** किया गया है। इसकी खास बात यह है कि यह पूरी तरह से भारतीय तकनीक पर बना हुआ है तथा यह एक **multi-part** मिशन है। इस बार इस में एक खास उपकरण शामिल किया गया है, जोकि चंद्रमा की सतह की निगरानी और चंद्रमा के वातावरण का अध्ययन करेगा। इसके अलावा इस बार अपना वैज्ञानिक अध्ययन और खोज अभियांत्रिकी को मजबूत करने के लिए तथा यान को सुरक्षित तरीके से चांद पर उतारने के लिए विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर लगाया गया है। इस वजह से चंद्रमा से जुड़ी हर छोटी से छोटी जानकारी हमे प्राप्त होगी। इस **चंद्रयान-3** को बनाने में लगभग 615 करोड रुपए की लागत लगी है।

दिनांक 14 जुलाई 2023 मे दोपहर 2:51 बजे चंद्रमा पर लॉन्च **(launch)** करने के बाद **चंद्रयान-3,** 40 दिनों के अथक प्रयास के बाद दिनांक 23 अगस्त 2023 को शाम ठीक 6 बजकर 4 मिनिट पर सफलता पूर्वक उतरा। यह समय शाम 5 बजकर 44 मिनिट पर शुरू हुआ। इस 20 मिनिट के सौफ्ट लैंडिंग को **“ 20 मिनट्स ऑफ टेरर” (Twenty Minutes of Terror)** कहा जा रहा था।

“ रखकर चाँद के उस पार कदम, आज हमने इतिहास बना दिया।
और जिन को शक था हमारी काबिलियत पर उन सबको गवाह बना दिया ”

चंद्रयान-3 की विशेषता तथा इससे भारत को प्राप्त होनेवाले लाभ निम्न प्रकार के होंगे।

चाँद पर पहुँचने वाला दुनिया का चौथा और **चंद्रयान-3** को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया है। **चंद्रयान-3** को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारकर वहां पर मौजूद पानी व बर्फ की उपस्थिति की जानकारी हमें प्राप्त होगी।

चंद्रमा की सतह व उसकी संरचना की जानकारी प्राप्त होगी। चंद्रमा पर मौजूद वायुमंडल, प्राकृतिक गैस, तत्व तथा खनिजों की हमे जानकारी प्राप्त होगी। चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल की हमे जानकारी प्राप्त होगी।
चंद्रयान-3 भारत के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के लिए एक चुनौती होगी और उन्हें नई तकनीकों को विकसित करने में मदद करेगा। **चंद्रयान-3** भारत के युवाओं को अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा। अंतरिक्ष क्षेत्र मे भारत को एक नई पहचान मिल गई है। **चंद्रयान -3** भारत के लिए एक राष्ट्रीय गौरव का विषय है।

इस कामयाबी को लेकर भारत ने विश्व मे अपना परचम लहराया है। मै, ISRO के सभी वैज्ञानिकों, कर्मचारियों और इंजीनियरों को इस बेहतरीन सफलता के लिए धन्यवाद देती हूँ और उन्हें भविष्य मे इससे अच्छा व गौरवशाली काम करने के लिए शुभकामनायें देती हूँ ताकि मेरे भारत देश का नाम इस विश्व मे बारबार रोशन हो और हमारा तिरंगा आसमान मे सभी से ऊंचा रहे।

तो आओ, चले हम सभी एक साथ जयघोष करते हैं !

भारत माता की जय।

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान।

जय हिन्द।

हिंदी एक भाषा मात्र नहीं है, यह एक अहसास है।

आत्मलीन

श्री भारत भूषण
वरिष्ठ अनुवादक

कभी आत्मलीन हो कर बैठों
खुद में खुद को खो कर बैठों
जागती आंखों से देखों स्वप्न तुम
जगते-2 सो कर बैठों

देखों ! यह कल्पना सजीव
मीलों फैला भूखंड नवीन
देख सकों तो देखों, तुम !
पुरातन नवीन में खो कर बैठों

सर्वत्र फैला उजियारा है
फिर संतप्त हृद्य को तुम्हारा है
क्यों आज मनुज ना हसता है
रह-रहकर दुख विषधर डसता है
मन आक्रांत तन बोझिल है
उठो! मन सबल तन वज्र सम कर बैठों

उठों! हिमखंड हिमालय तुम्हें बुलाता है
अथाह सागर गौरव गान सुनाता है
हो तुम उसी राम की संतति
जिसके लिए छोड़ा था मैने मार्ग
फिर राम की अलख जगा कर बैठों
नयनाभिराम, मन एक काम, प्रज्ञा महान लेकर बैठों
कभी आत्मलीन होकर बैठों

राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है

अनंत कुमार शेवड़े

हकीकत

श्री जयप्रकाश सैनी
आशुलिपिक, अहमदाबाद

मुझे इन दिनों एक ख्याल आ रहा है।
यह जीवन मेरा, यह किधर जा रहा है ।।

हकीकत में बदला, वो सपना जो देखा।
एक सपना अब फिर से देखा जा रहा है ।।

क्या यह हकीकत में बदलेगा फिर से।
या बदलेगा मेरा जीवन नए सिरे से ।।

है जीवन बदलना, नहीं एक रहना।
कुछ नयापन, मुझसे जुड़े जा रहा है ।।

मैं चाहूं तो कर लूं सभी सपनों को हकीकत।
क्या हकीकत में मुझमें यह हौसला आ रहा है ?

मुझे इन दिनों एक ख्याल आ रहा है।
यह जीवन मेरा, यह किधर जा रहा है ।।

बचपन का जमाना

श्री पंकज कुमार
डीईओ , चर्चगेट

वो बचपन कितना सुहाना था
जहां सिर्फ खुशियों का खजाना था
वो स्कूल ना जाने का बहाना था
और जाने पर घंटों आंसु बहाना था...

खबर ना था कुछ शाम की
ना सुबह का ठिकाना था
रूक कर आना स्कूल से
पर दोस्तों के साथ खेलने भी जाना था

दोस्तों के साथ वो लुका छिपी का खेल
जिसमें दोस्तों को एक बेहतरीन मेल था
वो बचपन तो बीत गया पर बचपन अब भी याद है
बचपन के खेल तो भूल गए सारे
पर उनके लिए माँ की डांट अभी भी याद है

छोटी-छोटी बातों पर झगड़े भूल गए दोस्तों के
पर वो अंताक्षरी के गीत अभी भी याद है
बीत गया बचपन सारा पर बचपन अब भी याद है
वो बचपन कितना सुहाना था जहां सिर्फ खुशियों का खजाना था

पावन भूमि ‘गया जी’ का धार्मिक महत्व

श्री दुर्गेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

गया मौर्य काल में एक महत्वपूर्ण नगर था। यहाँ खुदाई के दौरान सम्राट अशोक से संबंधित आदेश पत्र पाया गया है। गया बिहार के ही नहीं अपितु भारत के महत्वपूर्ण तीर्थस्थानों में से एक है। यह शहर हिन्दू एवं बोद्ध तीर्थयात्रियों के लिए विश्व विख्यात है। यहां का विष्णुपद मंदिर पर्यटकों के बीच मुख्य आकर्षण का केंद्र है। सन1787 ई0 में होल्कर वंश की (बुंदेलखंड की) सम्राज्ञी महारानी अहिल्याबाई ने विष्णु पद मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के पांव के निशान पर इस मंदिर का निर्माण कराया गया था। इस मंदिर के निर्माण में सीमेंट या कंक्रीट का तनिक भी इस्तेमाल नहीं हुआ है। काले पत्थरों को इस तरह से नक्काशी कर एवं एक दूसरों पर रख कर लगभग 30 मीटर/ 100 फीट ऊंचे मंदिर का निर्माण किया गया है जो अपनी पुरानी कलाकृतियों का अद्भुत नज़ारा प्रस्तुत करता है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु के करीब 40 सेंटीमीटर लंबे पांव के निशान हैं। गया शहरफल्गु नदी के तट पर स्थित है। इस नदी का हिन्दू व बौद्ध धर्मों में विशेष महत्व है। भगवान विष्णु का विष्णुपद मन्दिर इसके किनारे अवस्थित है।गया शहरबोध गया से मात्र 13 किलोमीटर उत्तर तथा बिहार की राजधानी पटना से 100 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है।

गया (Gaya) शहर को ज्ञान एवं मोक्ष की भूमि भी कहा जाता है। हर साल लाखों की संख्या में हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग अपने पितरों के मुक्ति और मोक्ष के कामना के लिए विश्व के अनेक भागों एवं भारत के सभी भागों जैसे उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम से गया में पिंडदान करने आते हैं। ऐसी मान्यता है कि गया में भगवान विष्णु स्वयं पितृदेव के रूप में निवास करते हैं। गया में श्राद्ध कर्म और तर्पण विधि करने से व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है। मुक्तिधाम के रूप में प्रसिद्ध गया (तीर्थ) को केवल गया न कह कर आदरपूर्वक **'गया जी'**भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने स्वयं इस स्थान पर अपने पिता राजा दशरथ का पिंड दान किया था। तब से यह माना जाने लगा की इस स्थान पर आकर कोई भी व्यक्ति अपने पितरो के नाम से पिंड दान करेगा तो उसके पितृ उससे तृप्त रहेंगे और वह व्यक्ति अपने पितृऋण से मुक्त हो जायेगा| इस स्थान का नाम ‘गया’ इसलिए रखा गया क्योंकि भगवान विष्णु ने यहीं के धरती पर ‘गयासुर’नाम के राक्षस का वध किया था।

पिंड दान एवं श्राद्ध कर्म का विस्तृत विवरण

हिन्दू धर्म में माता-पिता की सेवा को सबसे बड़ी पूजा माना गया है।यही कारण है कि हिंदू धर्म में श्राद्ध को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। श्राद्ध को पितृ पक्ष में किया जाता है। इसी पितृ पक्ष को ही श्राद्ध पक्ष के नाम से भी जाना जाता है। पितृ पक्ष के दौरान पितरों का तर्पण किया जाता है। ऐसा करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसी मान्यता हैं की पूर्वजों की कृपा से जीवन में आने वाली कई तरह परेशानियां दूर होती हैं। दरअसल, श्राद्ध न होने पर मृत लोगों की आत्मा को पूरी तरह से मुक्ति नहीं मिलती है, जिसकी वजह से लोगों को कई तरह की परेशानियां का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए श्राद्ध और तर्पण के लिए पितृ पक्ष का विशेष महत्व माना जाता है।

वैसे तो इसका शास्त्रीय समय निश्चित है, परंतु 'गया सर्वकालेषु पिण्डं दधाद्विपक्षणं' कहकर सदैव पिंडदान करने की अनुमति दे दी गई है। इसी कारण से साल के प्रत्येक दिन गया में श्राद्ध का कार्यक्रम चलता रहता है पर हर साल आश्विन मास के कृष्ण पक्ष से प्रारंभ होकर अमावस्या तक के 15 दिनों की अवधि पितृ पक्ष अर्थात श्राद्ध पक्ष का हिंदू धर्म में विशेष महत्व माना गया है। यह पितृ पक्ष गणेश उत्सव के तुरंत बाद वाले पखवाड़े के बाद आता है। ये समय पितरों को समर्पित होता है। इस दौरान पितरों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध कर्म और उनका तर्पण किया जाता है। सनातन धर्म में बेहद ही खास माने जाने वाले पितृ पक्ष को लेकर मान्यता है कि इन दिनों में श्राद्ध और तर्पण करने से पितर प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद देते हैं। ऐसी मान्यता है की जिनके माता- पिता एवं सास – ससुर जीवित नहीं है उन लोंगों को ही पति पत्नी समेत विशेषकर पितृपक्ष के दौरान ही श्राद्ध कर्म करना चाहिए। पितृ पक्ष में तीन पीढ़ियों तक के पिता पक्ष के तथा तीन पीढ़ियों तक के माता पक्ष के पूर्वजों के लिए तर्पण किया जाता हैं। इन्हीं को पितर कहते हैं।मुख्य रूप से तर्पण के लिए आपको कुश, अक्षत्, जौ और काला तिल का उपयोग करना चाहिए। तर्पण करने के बाद पितरों से प्रार्थना करना चाहिए और गलतियों के लिए क्षमा मांगनी चाहिए।

पितरों के लिए श्रद्धा से किए गए मुक्ति कर्म को ही श्राद्ध कहते हैं तथा तृप्त करने की क्रिया और देवताओं, ऋषियों या पितरों को तंडुल या तिल मिश्रित जल अर्पित करने की क्रिया को तर्पण कहते हैं। तर्पण करना ही पिंडदान करना है। इस दौरान अपने पूर्वजों की तीन पीढ़ियों की पूजा की जाती है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, पिछली तीन पीढ़ियों की आत्माएं पितृ लोक में रहती हैं, जो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का एक क्षेत्र है और जो मृत्यु के देवता यम द्वारा शासित होता है।पितृ पक्ष में जो तर्पण किया जाता है उससे वह पितृ प्राण स्वयं आप्यापित होता है। पुत्र या उसके नाम से उसका परिवार जो यव (जौ) तथा चावल का पिण्ड देता है, उसमें से अंश लेकर वह अम्भप्राण का ऋण चुका देता है ।ऐसी मान्यताएँ है की पितृपक्ष के 15 दिनों की अवधि के दौरान पितृसुक्त या गीता का पाठ करना चाहिए। यदि यह संभव ना हो तो गीता का संपूर्ण पाठ न कर गीता के दूसरे एवं सातवें अध्याय का पाठ पितरों की शांति, उनका आशीर्वाद प्राप्त करने और उन्हें मुक्ति प्रदान का मार्ग दिखाने के लिए करें अवश्यकरना चाहिए। पितृ पक्ष में मांस, मदिरा, अंडा, शराब बीड़ी, सिगरेट आदि का सेवन वर्जित है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, पितृ पक्ष में किसी भी तरह का मांगलिक कार्य नहीं किया जाता है जैसे शादी, मुंडन, सगाई और गृह प्रवेश इत्यादि। इन दिनों कोई भी शुभ कार्य करना अशुभ माना जाता है।भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण प्रमुख माने गए हैं- पितृ ऋण, देव ऋण तथा ऋषि ऋण। इनमें पितृ ऋण सर्वोपरि है। पितृ ऋण में पिता के अतिरिक्त माता तथा वे सब बुजुर्ग भी सम्मिलित हैं, जिन्होंने हमें अपना जीवन धारण करने तथा उसका विकास करने में सहयोग दिया। अत: हमें श्राद्ध कर्म करते समय नियमों का पालन करना चाहिए ।हमारें शास्त्रों में विभिन्न प्रकार के श्राद्ध कर्म का उल्लेख किया गया है जिनका हिंदु धर्म में अपना अलग-2 महत्व है।

विभिन्न सम्प्रदायों में श्राद्ध की विभिन्न प्रचलित परिपाटियां चली आ रही हैं। अपनी कुल परंपरा के अनुसार पितरों की तृप्ति हेतु श्राद्ध कर्म अवश्य करना चाहिए।

तोते में प्राण

श्री आभाष कुमार
व.ले.प.अ /चर्चगेट

तोते में प्राण बहुत ही पुरानी कथा है। हम सभी ने अपने बचपन में नानी-दादी से सुनी है। कहानी में एक राजा होता था जिसका प्राण एक तोते मैं रहता था। इसलिए वह उस तोते को सात समुन्द्र पार सुरक्षित स्थान पर रखता था। इस कारण अपने आप को काफी सुरक्षित महसूस करता था। उसे इस बात का अहंकार था की बलशाली से बलशाली व्यक्ति भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। इसलिए वह निडर और निरंकुश हो गया। परन्तु यह राज एक जादूगर जान गया। किसी भी तरह वह उस तोते तो हासिल कर आपने कैद में ले लिया। अब वह यदि तोते का टांग खींचता तो राजा तो परेशानी होती थी। यदि जादूगर तोते की गर्दन मड़ोड़ता तो राजा को दर्द होता था। अर्थात, अब राजा, एक राजा न होकर जादूगर का गुलाम हो गया।

यह तोता वास्तव में हर मानव में पाए जाने वाली आसक्ति का भाव है। ऐसे कई प्रकार की आसक्तियां हमने पाल रखीं हैं। जितनी आसक्तियां उतने तोते अर्थांत हम उतने ही अधिक गुलाम। ये तोते अर्थात आसक्ति कई रूपों में दिख जायेगा। सबसे पहली आसक्ति हमारे खुद के शरीर में फिर परिवार में तत्पश्चात अनेक भौतिक वस्तुओं में होती है।

हमें दुखी करने/ कष्ट / हानि पहुंचने के लिए किसी को हमारे ऊपर आघात करने की जरुरत नहीं है। हमने जो ढेर सारे तोते, जैसे- मकान, गाड़ी व्यवसाय, धन-संपत्ति सामाजिक सम्बन्ध , सुख सुविधओं के साधन आदि जो पाल रखे है! इनमें से किसी को भी आघात पहुंचकर हमें कष्ट पहुँचाया जा सकता है। जिस व्यक्ति ने जितने अधिक तोते पाल रखे होंगे उसके दुखी होने की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी। जैसे मकान को वर्षा आदि प्राकृतिक आपदा से नुकसान पहुंचे तो नुकसान तो मकान का होता है लेकिन कष्ट हमें होता है। यदि गाड़ी में डेंट आ जाये तो नुकसान तो गाड़ी का होता है लेकिन कष्ट हमें पहुँचता है। यदि व्यवसाय में घाटा हो जाये तो हानि तो व्यवसाय को होती है लेकिन कष्ट हमें पहुँचता है। यदि धन-संपत्ति की चोरी हो गई तो धन की हानि होती है लेकिन कष्ट हमें होता है। कैसे-कैसे तोते अर्थात आसक्तियाँ हमने पाल राखी है।

आखिर इसका समाधान क्या है ? इसका समाधान अनासक्ति के भाव का अभ्यास कर कार्य करना है। इसको ही भगवान श्री कृष्णा ने 'गीता' के तीसरे अध्याय में 'कर्मयोग' के रूप में बताया है। महात्मा गाँधी ने इसे 'ट्रस्टीशिप अवधारणा' के रूप में हमें बताया है।

यदि हम 'कर्मयोग' और 'ट्रस्टीशिप की अवधारणा' का पालन कर कार्य करेंगे तो हममें अनासक्त भाव से कार्य करने की शक्ति बढ़ती जायेगी। अर्थात हमारे तोते (हमारी कमजोरिओं) की संख्या और प्रभाव धीरे-धीरे घट जायेगा। हमारे कार्य की गुणवत्ता तद्रुरू बढ़ती जाएगी साथ ही साथ हम क्षणिक सुख-दुःख के भाव से ऊपर उठते जाएंगे और परम आनंद के भाव की और अग्रसर होते जायेंगे।

हिंदी एक भाषा मात्र नहीं है, यह एक अहसास है।

हिन्दी दिवस 2022 का समापन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान, इस कार्यालय द्वारा मुख्यालय, चर्चगेट एवं लेखापरीक्षा के सभी शाखा कार्यालयों में निबंध, टिप्पण तथा सुलेख आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा मुख्यालय में समापन समारोह कार्यक्रम (दिनांक- 30/09/2022) में प्रश्नावली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह महानिदेशक लेखापरीक्षा महोदय, श्री धीरेन माथुर, की अध्यक्षता में दिनांक 30/09/2022 को मुख्यालय, चर्चगेट में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री उदय शंकर झा, मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट को आमंत्रित किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि, महानिदेशक लेखापरीक्षा महोदय तथा निदेशक लेखापरीक्षा ने दीप प्रज्जवलित कर किया। तत्पश्चात, श्री नीरज कुमार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी ने हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर माननीय गृह मन्त्री जी के संदेश का पठन किया। मुख्य अतिथि का संक्षिप्त परिचय, श्री भारत भूषण, वरि. हिन्दी अनुवादक ने सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कराया।

इस अवसर पर महानिदेशक लेखापरीक्षा महोदय तथा मुख्य अतिथि महोदय द्वारा इस कार्यालय के वार्षिक हिन्दी पत्रिका ‘अभिव्यक्ति’ के 50 वें अंक विमोचन भी किया गया।

महानिदेशक लेखापरीक्षा महोदय, मुख्य अतिथि महोदय तथा निदेशक ने अपने कर-कमलों से,हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। महानिदेशक लेखापरीक्षा महोदय ने आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों तथा विजेताओं को बधाईयाँ भी दी। इस कार्यालय के वार्षिक हिन्दी पत्रिका ‘अभिव्यक्ति’ में अपनी मौलिक रचनाओं का योगदान करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद दिया।

हिन्दी दिवस 2022 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम

हिन्दी मुहावरे, कहावतें एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री ए. के. शुक्ला, वलेपअ	प्रथम
2	श्री प्रतीक कुमार, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री सुरज पांडे, सलेपअ	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (प्रवीणता प्राप्त प्रतिभागियों के लिए)

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री नीरज कुमार, सलेपअ	प्रथम
2	श्री पंकज कुमार, डी.ई.ओ.	द्वितीय
3	श्री सुभाष कुमार, सलेपअ	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (कार्यसाधक प्रतिभागियों के लिए)

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्रीमती सुनीता दोडमाणी, लेखापरीक्षक	प्रथम
2	श्री विकास ब्रह्मक्षत्रिय, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री अजुर्न कामठे, सहा. पर्यवेक्षक	तृतीय

सुलेख प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री विकास ब्रह्मक्षत्रिय, सलेपअ	प्रथम
2	श्री नीरज कुमार, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री तीरथ कुमार, एम,टी.एस	तृतीय

टिप्पण प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री विकास ब्रह्मक्षत्रिय, सलेपअ	प्रथम
2	श्री पंकज कुमार, डी.ई.ओ.	द्वितीय
3	श्री अजुर्न कामठे, सहा. पर्यवेक्षक	तृतीय

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पश्चिम रेलवे, मुंबई द्वारा 16 नवंबर 2022 को आयोजित आडिट दिवस कार्यक्रम की एक झलक।

महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय पश्चिम रेलवे, मुंबई में श्री वी.जी कांबरे,सहायक पर्यवेक्षक, सेवानिवृति कार्यक्रंम के दौरान निदेशक महोदय से सेवाप्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए।

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पश्चिम रेलवे,

मुंबई - 400020

2023